

సం. (సం. పేజీ)	పేజీ	వే. నాటి	వే. నాటి
1	0-4 1/8"	9-3 1/2"	12-0 7-0
2	1-0 3/8"	24-9-6 1/2"	12-0 1-0
3	1-5 3/8"	35-9-8 1/2"	8-0 7-0
4	1-11 3/8"	46-9-11 1/2"	4-0 3-0
5	2-4 3/8"	57-9-14 1/2"	12-0 9-6
6	3-1 1/8"	74-3-18 1/2"	12-0 3-0
7	4-2 7/8"	101-9-25 5/8"	8-0 3-0
8	6-3 5/8"	151-3-37 9/8"	8-0 5-0
9	8-4 3/8"	200-9-50 1/2"	8-0 7-0
10	9-8 3/8"	233-9-53 5/8"	8-0 5-0
11	10-7 3/8"	255-9-63 11/8"	12-0 7-0
12	11-4 1/8"	272-3-65 0 7/8"	12-0 1-0
13	12-3 1/2"	294-3"	4-0 3-0
14	12-1 3/8"	305-3"	12-0 9-0
15	14-6 5/8"	349-3"	8-0 3-0
16	14-9 3/8"	354-9"	12-0 1-0

Nise OMEZ OMEZ-D

సం. పేజీ	పేజీ	వే. నాటి	వే. నాటి
1	0-4 1/8"	9-3 1/2"	12-0 7-0
2	1-0 3/8"	24-9-6 1/2"	12-0 1-0
3	1-5 3/8"	35-9-8 1/2"	8-0 7-0
4	1-11 3/8"	46-9-11 1/2"	4-0 3-0
5	2-4 3/8"	57-9-14 1/2"	12-0 9-6
6	3-1 1/8"	74-3-18 1/2"	12-0 3-0
7	4-2 7/8"	101-9-25 5/8"	8-0 3-0
8	6-3 5/8"	151-3-37 9/8"	8-0 5-0
9	8-4 3/8"	200-9-50 1/2"	8-0 7-0
10	9-8 3/8"	233-9-53 5/8"	8-0 5-0
11	10-7 3/8"	255-9-63 11/8"	12-0 7-0
12	11-4 1/8"	272-3-65 0 7/8"	12-0 1-0
13	12-3 1/2"	294-3"	4-0 3-0
14	12-1 3/8"	305-3"	12-0 9-0
15	14-6 5/8"	349-3"	8-0 3-0
16	14-9 3/8"	354-9"	12-0 1-0

LEON Gutfeel Hydroheal AM

సంఖ్య		పేరు	తండ్రి పేరు	తల్లి పేరు	తండ్రి పేరు	తల్లి పేరు
17	149-000	17-07/8/4:34"	409-9"	4-0	1-0	
18	153-000	17-6 ³ / ₈ /4:45"	420-9"	12-0	7-0	
19	157-000	17-11 ³ / ₈ /4:6"	431-9"	8-0	3-0	
20	163-000	18-8 ³ / ₈ /4:8"	448-3"	8-0	7-0	
21	167-000	19-1 ⁵ / ₈ /4:9 ³ / ₈ "	459-3"	4-0	3-0	
22	171-000	19-7 ¹ / ₈ /4:10 ³ / ₈ "	470-3"	12-0	9-0	
23	175-000	20-0 ⁵ / ₈ /5:0 ³ / ₈ "	481-3"	8-0	5-0	
24	183-000	20-11 ⁵ / ₈ /5:2 ³ / ₈ "	503-3"	12-0	7-0	
25	189-000	21-7 ³ / ₈ /5:5"	519-9"	12-0	1-0	
26	197-000	22-6 ³ / ₈ /5:7 ³ / ₈ "	541-7.5"	4-0	3-0	
27	217-000	24-10 ³ / ₈ /6:2 ³ / ₈ "	596-9"	8-0	3-0	
28	219-000	25-1 ¹ / ₈ /6:3 ³ / ₈ "	602-3"	12-0	1-0	
29	225-000	25-9 ³ / ₈ /6:5 ³ / ₈ "	618-9"	12-0	5-0	
30	239-000	27-4 ⁵ / ₈ /6:10 ³ / ₈ "	657-3"	4-0	1-0	
31	247-000	28-3 ⁵ / ₈ /7:0 ³ / ₈ "	679-3"	8-0	3-0	
32	253-000	28-11 ³ / ₈ /7:3"	695-9"	8-0	7-0	

వర్గం	నిర్మాణ పనులు	అనుబంధ పనులు	మొత్తం	గమనికలు
33	255-00	29-2 5/8" 7.375"	701-3"	12-0 5-0
34	261-00	29-10 3/4" 7.575"	717-9"	12-0 9-0
35	265-00	30-4 3/8" 7.75"	728-9"	8-0 5-0
36	269-00	30-9 3/8" 7.875"	739-9"	4-0 1-0
37	273-00	31-3 3/8" 7.875"	750-9"	12-0 7-0
38	279-00	31-11 5/8" 7.875"	767-3"	12-0 1-0
39	283-00	32-5 1/8" 8.125"	778-3"	8-0 7-0
40	287-00	32-10 5/8" 8.25"	789-3"	4-0 3-0
41	289-00	33-1 3/8" 8.375"	794-3"	8-0 1-0
42	297-00	34-0 3/8" 8.625"	816-9"	12-0 3-0
43	307-00	35-2 1/8" 8.875"	844-3"	8-0 3-0
44	309-00	35-4 3/8" 9.125"	849-9"	12-0 1-0
45	315-00	36-1 1/8" 9.375"	866-3"	12-0 5-0
46	337-00	38-7 3/8" 9.75"	926-9"	8-0 3-0
47	343-00	39-3 5/8" 10.125"	943-3"	8-0 7-0
48	345-00	39-6 3/8" 10.375"	948-9"	12-0 5-0
49	347-00	39-9 1/8" 10.625"	954-3"	4-0 3-0

NISE OMEZ OMEZ-D SR

వర్గం	నక్షత్రం	అనుబంధ పనులు	మొత్తం	గమనికలు
6-0	సూర్యవారి 15- నవంబరు	5-0 వీపు 3-0 చక్ర	8-0	నిర్మాణం
4-0	బుధవారి 9- అక్టోబరు	7-0 గోడ 9-0 క్రైస్తవ	16-0	"
5-0	గురువారి 14- అక్టోబరు	3-0 నిండు 7-0 ఇల్లు	10-0	"
6-0	శుక్రవారి 19- మే	7-0 గోడ 5-0 నక్షత్ర	12-0	"
7-0	శనివారి 24- నవంబరు	3-0 నిండు 3-0 చక్ర	6-0	"
8-0	గురువారి 18- డిసెంబరు	5-0 వీపు 9-0 క్రైస్తవ	14-0	"
6-0	శుక్రవారి 23- డిసెంబరు	1-0 డుబ్బ 7-0 ఇల్లు	8-0	"
7-0	శనివారి 1- అక్టోబరు	5-0 వీపు 5-0 చక్ర	10-0	"
4-0	బుధవారి 17- అక్టోబరు	3-0 నిండు 4-0 చక్ర	7-0	"
6-0	శుక్రవారి 27- డిసెంబరు	3-0 నిండు 9-0 క్రైస్తవ	12-0	"
5-0	గురువారి 26- అక్టోబరు	1-0 డుబ్బ 4-0 ఇల్లు	5-0	"
2-0	శనివారి 15- నవంబరు	7-0 గోడ 3-0 చక్ర	10-0	"
3-0	శనివారి 9- అక్టోబరు	1-0 డుబ్బ 9-0 క్రైస్తవ	10-0	"
2-0	శనివారి 23- డిసెంబరు	3-0 నిండు 7-0 ఇల్లు	10-0	"
3-0	శనివారి 17- అక్టోబరు	5-0 వీపు 4-0 చక్ర	9-0	"
4-0	బుధవారి 6- అక్టోబరు	3-0 నిండు 3-0 చక్ర	6-0	"
1-0	శనివారి 22- నవంబరు	1-0 డుబ్బ 2-0 ఇల్లు	3-0	"

LEON Gutfeel Hydroheal AM

క్ర.సం.	ద్రవం	మందు	గమనిక
50	351-00	40-25/8/1000	965-3
51	359-00	41-1 5/8/1000	987-3
52	363-00	41-7 1/8/1000	998-3
53	373-00	42-8 7/8/1000	1025-3
54	377-00	43-2 3/8/1000	1036-9
55	379-00	43-5 1/8/1000	1042-3
56	399-00	45-8 5/8/1000	1097-3
57	405-00	46-4 3/8/1000	1113-9
58	409-00	46-10 3/8/1000	1124-3
59	433-00	49-7 3/8/1000	1190-3
60	437-00	50-0 3/8/1000	1201-9
61	441-00	50-6 3/8/1000	1212-9
62	449-00	51-5 3/8/1000	1234-9
63	463-00	53-0 5/8/1000	1273-3
64	469-00	53-8 7/8/1000	1289-9
65	471-00	53-11 5/8/1000	1295-3
66	477-00	54-7 1/8/1000	1311-9

నాగన				
--	--	--	--	--

పాస్ పరీక్ష			
సం.	పేరు	గ్రేడ్	మార్కులు
1	569-00	56-03/8/14-03	12-00 1-0
2	569-00	57-21/8/14-03	8-0 1-0
3	505-00	57-10/3/8/14-03	8-0 5-0
4	507-00	58-11/8/14-03	12-00 3-0
5	525-00	60-17/8/14-03	12-00 5-0
6	527-00	66-45/8/14-03	4-0 3-0
7	531-00	60-10/8/14-03	12-00 9-0
8	535-00	61-35/8/14-03	8-0 5-0
9	539-00	61-9/8/14-03	4-0 1-0
10	549-00	62-10/7/8/14-03	12-00 1-0
11	553-00	63-43/8/14-03	8-0 7-0
12	559-00	64-05/8/14-03	8-0 1-0
13	561-00	64-33/8/14-03	12-00 9-0
14	567-00	64-11/5/8/14-03	12-00 3-0
15	577-00	66-13/8/14-03	8-0 3-0
16	589-00	67-57/8/14-03	8-0 1-0
17	595-00	68-21/8/14-03	8-0 5-0

పాస్ పరీక్ష			
సం.	పేరు	గ్రేడ్	మార్కులు
1	500-00	50-00/8/14-03	12-00 1-0
2	500-00	50-00/8/14-03	8-0 1-0
3	500-00	50-00/8/14-03	8-0 1-0
4	500-00	50-00/8/14-03	8-0 1-0
5	500-00	50-00/8/14-03	8-0 1-0
6	500-00	50-00/8/14-03	8-0 1-0
7	500-00	50-00/8/14-03	8-0 1-0
8	500-00	50-00/8/14-03	8-0 1-0
9	500-00	50-00/8/14-03	8-0 1-0
10	500-00	50-00/8/14-03	8-0 1-0
11	500-00	50-00/8/14-03	8-0 1-0
12	500-00	50-00/8/14-03	8-0 1-0
13	500-00	50-00/8/14-03	8-0 1-0
14	500-00	50-00/8/14-03	8-0 1-0
15	500-00	50-00/8/14-03	8-0 1-0
16	500-00	50-00/8/14-03	8-0 1-0
17	500-00	50-00/8/14-03	8-0 1-0
18	500-00	50-00/8/14-03	8-0 1-0
19	500-00	50-00/8/14-03	8-0 1-0
20	500-00	50-00/8/14-03	8-0 1-0

			దనకం	గలగలం
84	597-00	68-4 ³ / ₈ 7 ¹ / ₄ "	164-9"	12-0 3-00
85	603-00	69-1 ¹ / ₈ 7 ¹ / ₄ "	1658-3"	12-0 7-0
86	617-00	70-8 ³ / ₈ 7 ¹ / ₄ "	1696-9"	4-0 3-0
87	625-00	71-1 ³ / ₈ 7 ¹ / ₄ "	1718-9"	8-B 5-0
88	633-00	72-6 ³ / ₈ 7 ¹ / ₄ "	1740-9"	12-0 7-0
89	639-00	73-2 ⁵ / ₈ 7 ¹ / ₄ "	1767-3"	12-0 1-0
90	647-00	74-1 ⁵ / ₈ 7 ¹ / ₄ "	1779-3"	4-0 3-0
91	651-00	74-7 ¹ / ₈ 7 ¹ / ₄ "	1790-3"	12-0 9-0
92	657-00	75-3 ³ / ₈ 7 ¹ / ₄ "	1806-9"	12-0 3-0
93	667-00	76-5 ¹ / ₈ 7 ¹ / ₄ "	1834-3"	8-0 3-0
94	675-00	77-4 ¹ / ₈ 7 ¹ / ₄ "	1856-3"	12-0 5-0
95	679-00	77-9 ⁵ / ₈ 7 ¹ / ₄ "	1867-3"	8-00 1-0
96	685-00	78-5 ¹ / ₈ 7 ¹ / ₄ "	1883-9"	8-00 5-0
97	687-00	78-8 ⁵ / ₈ 7 ¹ / ₄ "	1889-3"	12-00 3-0
98	715-00	81-11 ¹ / ₈ 7 ¹ / ₄ "	1966-3"	8-00 5-00
99	723-00	82-10 ¹ / ₈ 7 ¹ / ₄ "	1988-3"	12-00 7-00
100	729-00	83-6 ³ / ₈ 7 ¹ / ₄ "	2004-9"	12-00 1-0

Nise OMEZ OMEZ-D_{SR}

వాలెటం	నక్షత్రం	(యోజ) తయారీ	అంక	యోజ
4-0 యుఫవారి	24- నేటివారి	7-0 గేటి	3-0	
2-0 నేటివారి	18- వేటి	1-0 డ్విజ	9-0	
2-0 నేటివారి	22- వేటి	3-0 సియ	2-0	
4-0 యుఫవారి	5- మేగింగ	3-0 సియ	7-0	
6-0 సేప్టవారి	15- నేటి	3-0 సియ	3-0	
4-0 యుఫవారి	9- వేటి	5-0 వేప్	9-0	
6-0 సేప్టవారి	19- మాల	5-0 వేప్	5-0	
7-0 వేటివారి	24- నేటివారి	1-0 డ్విజ	3-0	
5-0 సుమవారి	18- వేటి	3-0 సియ	9-0	
4-0 యుఫవారి	17- అమారి	1-0 డ్విజ	4-0	
6-0 సేప్టవారి	29- వేటి	1-0 డ్విజ	9-0	
3-0 వేటివారి	5- మేగింగ	5-0 వేప్	7-0	
5-0 సుమవారి	26- వేటి	7-0 గేటి	4-0	
2-0 నేటివారి	15- నేటి	5-0 వేప్	3-0	
2-0 నేటివారి	23- వేటి	1-0 డ్విజ	7-0	
4-0 యుఫవారి	6- వేటి	1-0 డ్విజ	3-0	
2-0 నేటివారి	27- వేటి	3-0 సియ	9-0	

LEON Gutfeel Hydroheal AM

		ಸೂಚನೆ	ಮಾಪ	ಮಾಪ
101.	737-00 84-53/8 21.13 2026-9'	4-0	3-0	
102.	741-00 84-107/8 21.23 2039-9'	12-00	9-0	
103.	757-00 86-87/8 21.82 2081-9'	8-00	3-0	
104.	759-00 86-115/7 21.82 2089-3'	12-00	1-0	
105.	777-00 89-03/8 21.82 2136-9'	12-0	3-0	
106.	779-00 89-31/8 21.82 2142-3'	4-0	1-0	
107.	783-00 89-85/8 21.82 2153-3'	12-0	7-0	
108.	787-00 90-21/8 21.82 2164-3'	8-0	3-0	
109.	793-00 90-103/8 21.82 2180-9'	8-0	7-0	
110.	813-00 93-13/8 21.82 2235-9'	12-0	7-0	
111.	819-00 93-101/8 21.82 2252-3'	12-0	1-0	
112.	827-00 94-91/8 21.82 2274-3'	4-0	3-0	
113.	829-00 94-117/8 21.82 2279-9'	8-0	1-0	
114.	847-00 97-05/8 21.82 2329-3'	8-0	3-0	
115.	849-00 97-33/8 21.82 2334-9'	12-0	1-0	
116.	855-00 97-115/8 21.82 2351-3'	12-0	5-0	
117.	867-00 99-41/8 21.82 2384-3'	12-0	3-0	

Nise

OMEZ

OMEZ-D_{SR}

ಪಾಠ್ಯ	ಪ್ರಕೃತಿ	ಮಾಪ	ಮಾಪ	ಮಾಪ
4-0 ಉಪವಾರು	10- ಮಳೆ.	3-0	ಹಿಡ್ 5-0	
5-0 ಕುಟುಂಬ	15- ನೈರ್ಮಲಿ.	7-0	ಹಿಡ್ 3-0	
2-0 ನೈರ್ಮಲಿ	8- ಮೈಲಿ	7-0	ಹಿಡ್ 4-0	
6-0 ಮೈಲಿ	24- ನೈರ್ಮಲಿ	5-0	ಮೈಲಿ 3-0	
7-0 ನೈರ್ಮಲಿ	6- ಬೆಳೆ	3-0	ಹಿಡ್ 3-0	
4-0 ಉಪವಾರು	22- (ಹಸಿ)	1-0	ಹಿಡ್ 2-0	
5-0 ಕುಟುಂಬ	27- ಹಿಡ್.	5-0	ಮೈಲಿ 9-0	
6-0 ಮೈಲಿ	5- ಮೈಲಿ	1-0	ಹಿಡ್ 7-0	
4-0 ಉಪವಾರು	26- ಹಿಡ್	3-0	ಹಿಡ್ 4-0	
2-0 ನೈರ್ಮಲಿ	24- ನೈರ್ಮಲಿ	7-0	ಹಿಡ್ 3-0	
7-0 ಕುಟುಂಬ	18- ಮೈಲಿ	1-0	ಹಿಡ್ 9-0	
2-0 ನೈರ್ಮಲಿ	1- ಬೆಳೆ	1-0	ಹಿಡ್ 5-0	
6-0 ಮೈಲಿ	17- ಬೆಳೆ	7-0	ಹಿಡ್ 4-0	
7-0 ನೈರ್ಮಲಿ	26- ಹಿಡ್	5-0	ಮೈಲಿ 4-0	
4-0 ಉಪವಾರು	15- ನೈರ್ಮಲಿ	3-0	ಹಿಡ್ 3-0	
2-0 ನೈರ್ಮಲಿ	9- ಬೆಳೆ	5-0	ಮೈಲಿ 9-0	
5-0 ಕುಟುಂಬ	24- ಹಿಡ್	1-0	ಹಿಡ್ 3-0	

LEON

Gutfeel

Hydroheal AM

	118.	119.	120.	121.	122.	123.	124.	125.	126.	127.	128.	129.	130.	131.	132.	133.	134.
869-00	99-67/8"	100-5 1/2"	101-2 1/8"	101-4 7/8"	103-5 5/8"	104-2 3/4"	104-7 3/8"	105-3 5/8"	106-2 5/8"	107-4 3/8"	115-7 3/8"	126-10 1/8"	132-6 3/4"	133-0 3/8"	144'-3 5/8"	158'-11 1/8"	169'-5 5/8"
24' 10 1/8"	24' 11 1/8"	24' 12 1/8"	24' 13 1/8"	24' 14 1/8"	24' 15 1/8"	24' 16 1/8"	24' 17 1/8"	24' 18 1/8"	24' 19 1/8"	24' 20 1/8"	24' 21 1/8"	24' 22 1/8"	24' 23 1/8"	24' 24 1/8"	24' 25 1/8"	24' 26 1/8"	24' 27 1/8"
99-0	100-0	101-0	102-0	103-0	104-0	105-0	106-0	107-0	108-0	109-0	110-0	111-0	112-0	113-0	114-0	115-0	116-0
103-5 5/8"	104-2 3/4"	105-3 5/8"	106-2 5/8"	107-4 3/8"	108-3 5/8"	109-2 5/8"	110-1 5/8"	111-0 5/8"	112-0 3/8"	113-0 1/8"	114-0 1/8"	115-0 1/8"	116-0 1/8"	117-0 1/8"	118-0 1/8"	119-0 1/8"	120-0 1/8"
124-9 13-00	125-10-00	126-11-00	127-12-00	128-13-00	129-14-00	130-15-00	131-16-00	132-17-00	133-18-00	134-19-00	135-20-00	136-21-00	137-22-00	138-23-00	139-24-00	140-25-00	141-26-00
124-9 13-00	125-10-00	126-11-00	127-12-00	128-13-00	129-14-00	130-15-00	131-16-00	132-17-00	133-18-00	134-19-00	135-20-00	136-21-00	137-22-00	138-23-00	139-24-00	140-25-00	141-26-00

135	1485	170'-17 1/8"	4083'-9"	480	5-0
136	1543	176'-9 5/8"	4243'-3"	8-0	7-6
137	1549	117'-5 7/8"	4259'-9"	8-0	1-0
138	1637	187'-6 7/8"	4501'-9"	4-0	3-0
139	1639	187'-9 5/8"	4507'-3"	8-0	1-0
140	1765	202'-2 7/8"	4853'-9"	8-0	5-0
141	1857	212'-9 3/8"	5106'-9"	12-0	3-0
142	1907	218'-6 1/8"	5244'-3"	4-0	3-0
143	1917	219'-7 7/8"	5271'-9"	12-0	3-0
144	1927	220'-9 5/8"	5299'-3"	8-0	3-0
145	2017	231'-13 1/8"	5546'-9"	8-0	3-0

Nise OMEZ OMEZ-D SR

ಪರಮ	ಪ್ರಕ್ಷೇಪ	ಪಾಯ	ಉದ್ದ	ವಿಧ
2-0 ಸಿಮೆಂಟ್	27-0 ರೇತಲ	5-0 ಪುಸ್ತ	9-0 100% ಸಿಮೆಂಟ್	"
6-0 ಕುಡ್ಡಾಡು	5-0 - ಪುಸ್ತ	7-0 ಸದ	7-0	"
4-0 ಬುಡ್ಡಾಡು	26-0 - ಟ.ಇ	5-0 ಪುಸ್ತ	4-0	"
5-0 ಸದಾಡು	1-0 - ಟಾಕ್ಸಿ	5-0 ಪುಸ್ತ	5-0	ಹಿಪ್ಪುಡು
2-0 ಸಿಮೆಂಟ್	17-0 - ಟಾಕ್ಸಿ	7-0 ಸದ	4-0	ಸಿಮೆಂಟ್
2-0 ಸಿಮೆಂಟ್	26-0 - ಟ.ಇ	5-0 ಪುಸ್ತ	4-0	"
4-0 ಬುಡ್ಡಾಡು	6-0 - ಟಾಕ್ಸಿ	7-0 ಪುಸ್ತ	3-0	"
6-0 ಕುಡ್ಡಾಡು	1-0 - ಟಾಕ್ಸಿ	3-0 ಸಿಮೆ	5-0	"
5-0 ಸದಾಡು	27-0 - ಕೆಡಲ	5-0 ಪುಸ್ತ	9-0	"
4-0 ಬುಡ್ಡಾಡು	26-0 - ಟ.ಇ	7-0 ಸದ	4-0	"
2-0 ಸಿಮೆಂಟ್	17-0 - ಟಾಕ್ಸಿ	7-0 ಪುಸ್ತ	4-0	"

LEON Gutfeel Hydroheal AM

[illegible]

Scanned by CamScanner

[illegible]

ఈ యాజ్ఞానికి బాధ్యులైన వారు.

LEON Gutfeel Hydroheal AM

[illegible]

2065201- 754

ಪ್ರಕ್ರಿಯೆ - ಮಿಗಿಲ
ಮಾಪಕ - ಕೆ.ಎಸ್.ಎಸ್

செயல் - செயல்

25-1-2025

64
1
A
LE
a

Kauf — 750

வாய்விடை - வாழ்நாள் -

25/5/20

1000

1. 2025

$$\begin{array}{r} 2509 \\ - 600 \\ \hline 1909 \end{array}$$

1-25652-5

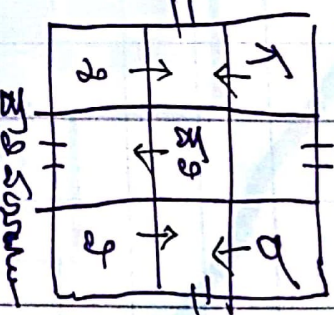
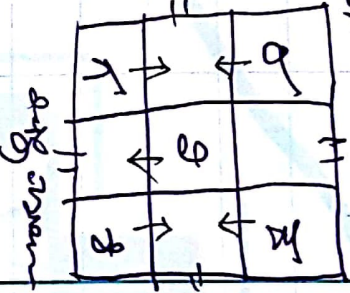
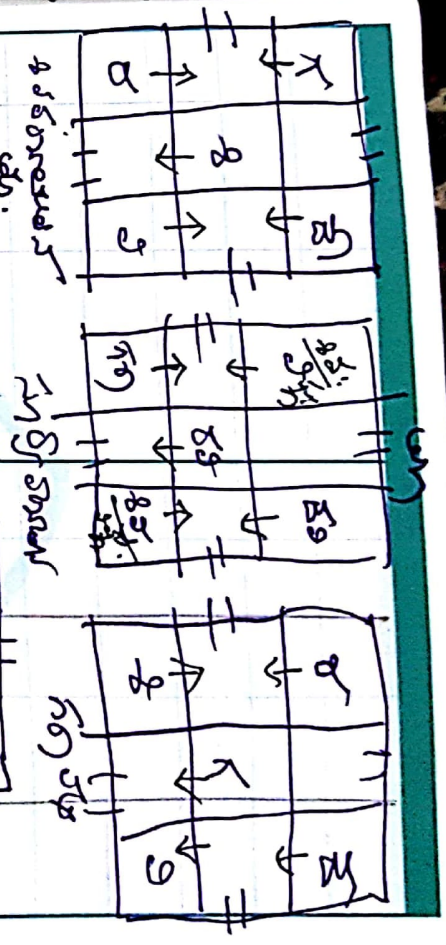
LEON Gutfeel Hydroheal AM

ది. ౧౮ - మంగళ
 ౨౫ - ౨౬
 మంగళ - ౨౭
 కల్యాణ - ౨౮
 ౨౯ - ౩౦
 ౩౧ - ౩౨

మొదటి	మధ్య	చివరి
౧	౨	౩
౪	౫	౬
౭	౮	౯
౧౦	౧౧	౧౨

౧. ౧ - ౧౦
 ౨. ౧౧ - ౨౦
 ౩. ౨౧ - ౩౦
 ౪. ౩౧ - ౪౦
 ౫. ౪౧ - ౫౦
 ౬. ౫౧ - ౬౦
 ౭. ౬౧ - ౭౦
 ౮. ౭౧ - ౮౦
 ౯. ౮౧ - ౯౦
 ౧౦. ౯౧ - ౧౦౦

Nise OMEZ OMEZ-D
 SR



౧	౨	౩	౪	౫	౬	౭	౮	౯
౧౦	౧౧	౧౨	౧౩	౧౪	౧౫	౧౬	౧౭	౧౮
౧౯	౨౦	౨౧	౨౨	౨౩	౨౪	౨౫	౨౬	౨౭
౨౮	౨౯	౩౦	౩౧	౩౨	౩౩	౩౪	౩౫	౩౬
౩౭	౩౮	౩౯	౪౦	౪౧	౪౨	౪౩	౪౪	౪౫
౪౬	౪౭	౪౮	౪౯	౫౦	౫౧	౫౨	౫౩	౫౪
౫౫	౫౬	౫౭	౫౮	౫౯	౬౦	౬౧	౬౨	౬౩
౬౪	౬౫	౬౬	౬౭	౬౮	౬౯	౭౦	౭౧	౭౨
౭౩	౭౪	౭౫	౭౬	౭౭	౭౮	౭౯	౮౦	౮౧
౮౨	౮౩	౮౪	౮౫	౮౬	౮౭	౮౮	౮౯	౯౦

LEON Gutfeel Hydroheal AM

మానోపకరణమ్ (శిల్పశాస్త్రంలోని కొలతలు)

మానం అంటే కొలత అని అర్థం. వాస్తు శాస్త్ర రీత్యా నిర్మించబడే నిర్మాణాలకు కొలతలు చాలా అవసరం. కళ్లకు కనిపించే ప్రపంచ మంతా పాంచభౌతికం. దృగ్గోచరమయ్యే ఏ వస్తువైనా నియమితమైన కొలతలుంటేనే అందంగా ఉంటుంది. మరొక నమూనా చేయడానికి అణువుగా ఉంటుంది. సులువౌతుంది కూడా. కొలతలు, వాటికున్న గణితాలు అన్ని శాస్త్రాలకు వెన్నెముక లాంటిది. కొలతలు లేని ప్రపంచం మనం ఊహించలేం. కాలాన్ని కొలుస్తున్నాము, వస్తువులన్నీ కొలుస్తున్నాము దేన్నయినా కొలుస్తాం. వాస్తు శాస్త్రంలో శాస్త్రకారులు వారి దేశ, కాల, ఆచారాలనుసరించి అనేక రకాల కొలతలు చెప్పారు. వాటి గురించి మయమతాది గ్రంథాల్లో ఈ క్రింది విధంగా తెలుపబడింది.

శ్లో॥ సర్వేషా మపి వాస్తునాం మానేనేవ వినిశ్చయః
తస్మాత్ మానోపకరణం వక్ష్యే సంక్షేపతః క్రమాత్
పరమాణు క్రమాద్భుద్ధం మానాంగులమితి స్మృతం
పరమాణు రితి ప్రోక్తం యోగీనాం దృష్టిగోచరమ్
(మయమతం)

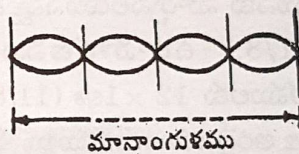
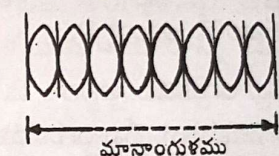
వాస్తు శాస్త్రంలో వివిధ స్థలాలు, భూములు, గృహ, గోపుర, ప్రాకార, మండపాలు, వివిధ వస్తువులు శిల్ప శాస్త్ర నిర్ణయ ప్రకారం రూపొందించడానికి కావలసిన కొలతలను 'మానం' అంటారు. ఈ మానం పరమాణువు నుండి పెరగడం వల్ల మానాంగుళం అవుతుంది. పరమాణు వంటే యోగులకు జ్ఞాన దృష్టిలో మాత్రమే కనిపించే సూక్ష్మ రూపం. ఆపరమాణువులు

8 పరమాణువులు	1 రథ రేణువు
8 రథ రేణువులు	1 (బా) వాలాగ్రము

8 వాలాగ్రములు	1 లిక్ష
8 లిక్షలు	1 యూక
8 యూకలు	1 యవ
8 యవలు	1 మానాంగుళము

ఈ మానాంగుళమునే దేవాంగుళము అని కూడా అందురు.

మానాంగుళం : 8 వడ్ల గింజలను నిలువుగా ప్రక్క ప్రక్కనే పెట్టి కొలిస్తే ఎంత పొడవు ఉంటుందో అంత పొడవును ఒక అంగుళం అని లెక్క పెట్టబడింది.



మానాంగుళము నుండి వచ్చిన వివిధ మానములు :

6 మానాంగుళములు	1 తాళము
2 తాళములు	1 వితస్తి

2 వితస్తిలు లేక 24 దేవాంగుళములు ఒక కిష్కు శిల్ప గజము లేక హస్తము.

కిష్కు శిల్ప గజమును, 'మూర', 'హస్తము' అని కూడా పిలుస్తారు. ఒక మూరకు 24 అంగుళాల పొడవని కాలానుక్రమంగా చెప్పబడింది. కాని కొన్ని కారణముల వలన ప్రత్యేకమైన మూర బద్ధలు కూడా చెప్పబడింది. అవి

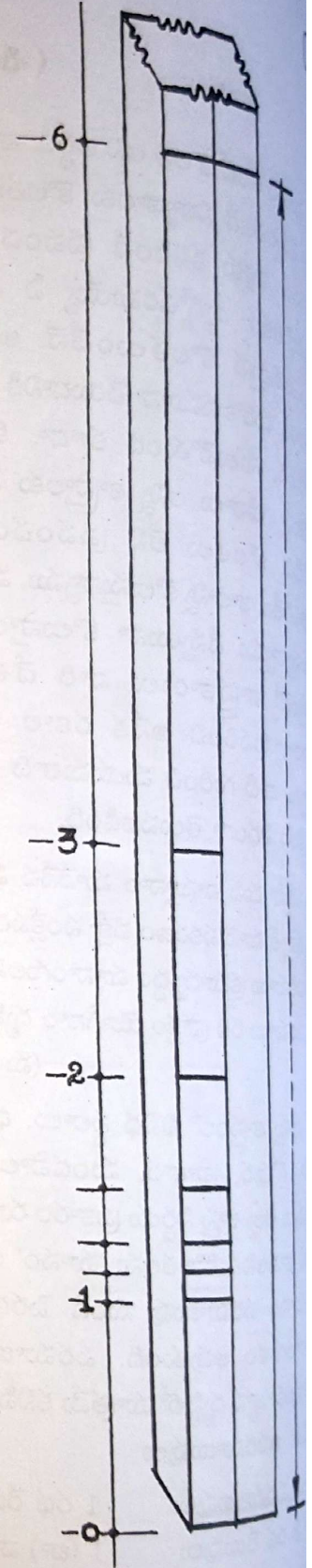
25 అం॥ ప్రమాణము గలది, ప్రాజాపత్య శిల్ప గజమని
 26 అం॥ ప్రమాణము గలది, ధనుర్ముష్టి శిల్ప గజమని
 27 అం॥ ప్రమాణము గలది, ధనుర్మహ శిల్ప గజమని
 28 అం॥ ప్రమాణము గలది, ప్రాచ్య శిల్ప గజమని
 29 అం॥ ప్రమాణము గలది, వైదేహ శిల్ప గజమని
 30 అం॥ ప్రమాణము గలది, వైపుల్య శిల్ప గజమని
 31 అం॥ ప్రమాణము గలది, ప్రక్షీర్ణ శిల్ప గజమని
 అందురు.

ఇల్లు, భవనము, రాజమందిరము, దేవాలయం
 మొదలైన కట్టడాల్ని కిష్కు శిల్ప గజము, ప్రాజాపత్య
 శిల్ప గజం ప్రమాణముతోను, బండి, మంచం
 మొదలైన వాటిని కిష్కు శిల్పగజంతోను, ఇంటి
 స్థలములను ధనుర్ముష్టి శిల్ప గజముతోను, గ్రామం,
 నగరం, పట్టణం మొదలైన నిలయాల్ని ధనుర్మహమ్
 అనే శిల్ప గజంతో అమర్చాలి.

ఒక దేవాంగుళము అనగా $1\frac{3}{8}$ లేక $1\frac{1}{8}$
 ఆంగ్లేయాంగుళములు. దేవాంగుళమును ఆంగ్లేయ
 అంగుళమునకు మార్చవలయునన్న సంఖ్య($1\frac{3}{8}$)
 లేక $1\frac{1}{8}$. ఉదాహరణమునకు 12
 దేవాంగుళములకు $12 \times 1\frac{3}{8} (1\frac{1}{8}) = 132 /$
 $8 = 16\frac{1}{2}$ ఆంగ్లేయ అంగుళములు. 24 దేవాంగు
 కములకు $24 \times 1\frac{1}{8} = 33$ ఆంగ్లేయాంగుళములు
 ($2' - 9''$) అడుగులు.

శిల్పగజమును తయారుచేసే విధానము :

చందనము, దేవదారు, టేకు, తాటి, మర్రి,
 మామిడి మొదలగు చెట్ల నుండి తీసిన కర్రతో
 చేయుదురు. ఈ కర్ర ఒక మూరపొడవు 1
 అంగుళము వెడల్పు, $\frac{1}{2}$ అంగుళము మందము
 కల్గినదిగా తయారుచేయాలి. పైన చెప్పిన 8
 రకములైన శిల్పగజముల పొడవు కలిగిన కర్రను
 గ్రహించి ఆ పొడవును 24 సమానభాగాలుగా
 చేసుకొని ఒక్కొక్క భాగమును ఒక్కొక్క అంగుళముగా
 గుర్తించాలి. ఆ అంగుళమును 8 సమానభాగాలు



మూరబద్ధత 1/4 భాగము

ప్రాసాద లక్షణం

చేసి $1/8, 1/4, 1/2, 3/4, 1, 2, 3, 4$, ఈ విధంగా 24 అంగుళములు గుర్తించవలయును.

నాలుగు కిష్కుగజాల పొడవును దండమని, ఎనిమిది దండముల పొడవును రజ్జు (త్రాడు) అని అంటారు. ఈత్రాడు ఆధారముగా భూములు, రహదారులు పొడవును కొలుచుటలో ఉపయోగిస్తారు.

గణితము :-

24 అంగుళములు = ఒక్క కిష్కు శిల్ప గజం

4 కిష్కుగజాలు = ఒక దండం

8 దండాలు (లేక) 32 కిష్కుగజాలు = ఒక రజ్జు (లేక) త్రాడు
 $32 \times 2' - 9'' = 88' - 0''$ అడుగులు

ప్రతిమలు కొలిచేటందులకు మూడు విధములైన అంగుళాలు ఉపయోగిస్తారు. అవి

1. మానాంగుళము
2. మాత్రాంగుళము
3. దేహలబ్ధాంగుళము

మానాంగుళము :-

వరమాణు క్రమంగా వృద్ధి చెందినది మానాంగుళము (8యవల విస్తారము కలది) ఇది ఒక నిర్ణీతమైన కొలత.

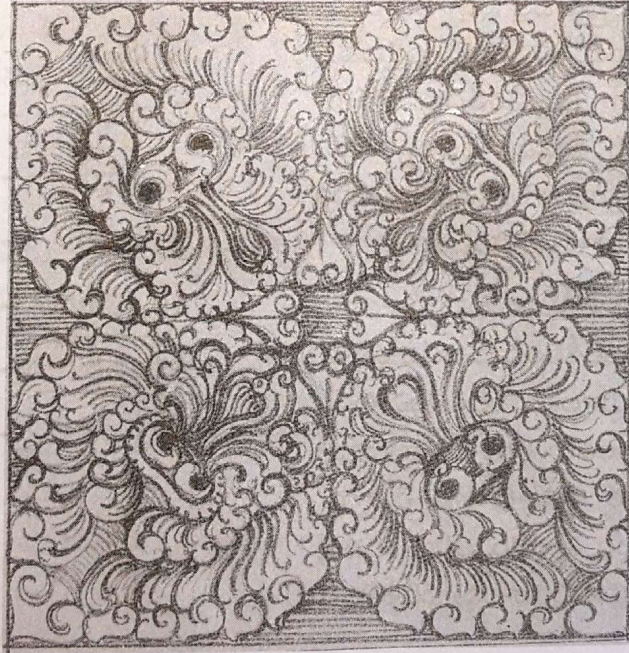
మాత్రాంగుళము :- యజమాని (కర్త), శిల్పి

మొదలైన వారి కుడిచేతి నడిమివేలులోని మధ్య పర్వప్రమాణము. ఇది వ్యక్తిని బట్టి హెచ్చు తగ్గులుగా ఉంటుంది. ఈ అంగుళము ఆధారముగ ఆత్మార్థ ప్రతిమలు కొలుస్తారు.

దేహలబ్ధాంగుళము :

ఇది దేవతా ప్రతిమల శరీరం కొలతకు సంబంధించినది. ఈ అంగుళమును దేహాంగుళమని, బేరాంగుళము అనియు అందురు.

ఒక్కొక్క దేవతా ప్రతిమను నిర్దేశింపబడిన తాలమానముచే చేయుట ఆచారం. తాలము అంటే విగ్రహము యొక్క ముఖం కొలత. ప్రతిమ ముఖం కొలతను 12 సమభాగాలు చేస్తే అందు ఒక భాగము ఒక అంగుళము అవుతుంది. ఈ దేహాంగుళమును ఆదారాన్ని చేసుకొని పంచ బేరములైన కర్మార్చ, ఉత్సవార్చ, శయనార్చ, బల్యార్చ, స్నానార్చల ఉన్నతములు నిర్ణయించడం జరుగుతుంది.



ప్రాసాద లక్ష్మణం

వాస్తు శాస్త్రంలో ఆలయం, గృహం, శిల్పం, యంత్రాలనే భాగాలు అంతర్భాగాలుగా చెప్పబడింది. ఆలయ వాస్తులో వివిధ దేవాలయాల నిర్మాణాలు, గృహవాస్తులో గృహనిర్మాణరీతులు, శిల్పవాస్తులో ప్రతిమల తయారీ, యంత్రవాస్తులో యంత్రభాగాలు ఇతరాలైన నిత్యజీవన అవసరాలకు ఉపయోగపడే వస్తువులను గూర్చిన వివరాలుంటాయి. ఈ ఆలయ, గృహ, శిల్ప, వస్తువుల తయారీకి ప్రత్యేక పద్ధతులుంటాయి. వాటికి పొడవు, వెడల్పులకు సంబంధించిన వివరాలు అవసరమవుతాయి. ఆ వివరాలన్నింటిని తెలుసుకొని ప్రకృతికి అనుకూలంగా శ్రేయస్సు కలిగే విధంగా నిర్మాణం చేయడం వల్ల జీవితం ఆనందదాయకమవుతుంది. శాస్త్ర ప్రకారం నిర్మాణాలు చేయడానికి ఆయాది గణితం చాలా అవసరం.

ఆయం అంటే ఆదాయం లేక లాభం అని అర్థం. ఆలయానికి గాని ఒక ప్రతిమకుగాని, గృహానికి గాని ఒక నిర్దిష్ట ప్రమాణాన్ని గ్రహించే ముందు దాన్ని తీసుకున్నందువల్ల వచ్చే ఆదాయం లేక శుభమానం ఏమిటో వివరించే లక్షణమే ఆయాదిలక్షణం. అనగా సుఖసంపదల కొరకు నిర్మాణ స్థలము యొక్క పొడవు, వెడల్పులను సరించి పిండమును సాధించి ఆపిండము ప్రాతిపదిక ఆధారముగ మంచి ఫలితాలు సాధించడం.

ఆరు విషయాలను పరిశీలించుటను షడాయాది అని, పది విషయాలను పరిశీలించుటను దశాయాది అని, పదహారు విషయాలను పరిశీలించుటను షోడశ ఆయాది అని అందరు శాస్త్ర పరిశీలకులు, షోడశ ఆయాదిని పూర్ణ ఆయాది అని చెప్తారు. షడాయాది అంటే ఆయం, వ్యయం, యోని, దినం, వారం, అంశం అను ఆరువిషయాలను పరిశీలించి తెలుసుకొనుట.

ఆయం అంటే రాబడి లేక మిగులు, ధనం వ్యయం అంటే ఖర్చులేక తరుగు

యోని అంటే దిశ (8దిక్కులు)

దినం అంటే నక్షత్రం అశ్వినీ మొదలు రేవతి వరకు 27 నక్షత్రాలు

వారం అంటే, ఆది, సోమ, మంగళ, బుధ, గురు, శుక్ర, శనివారములు

అంశం అంటే గుణం అని అర్థం

ఆయం

ఆయం 12 రకాలు

1. యోగం - అనుకోకుండా వచ్చేది
2. భోగం - అనుభవించేది
3. సంప్రాప్తి - కలసివచ్చేది
4. వీరం - శౌర్యం
5. ధాన్యం - తిండికి ఉపయోగపడేది
6. ధనం - డబ్బు
7. సుఖం - సుఖము
8. ధర్మం - ధర్మము
9. జ్ఞానం - తెలియజేప్పేది
10. యోగం - కలిసేది
11. సిద్ధి - కూడేది
12. అర్థం - డబ్బు

వ్యయం

ఖర్చును తెలియజెప్పేవి, ఇవి పది రకాలు అవి

1. భుక్తి - అనుభవించేది
2. ముక్తి - ఇల్లు
3. శుభం - మంచి
4. సమృద్ధి - ఎక్కువ
5. సంపత్తు - రకరకాల సమృద్ధి
6. ధనం - ధనము
7. మేలు - ఎక్కువ చేయుట
8. నాశం - వినాశం
9. కలహం - పోట్లాట
10. స్నేహం - కట్టుబాటు

యోని

ఇది 8 రకాలుగా ఉంటుంది అవి దిక్కులు ననుసరించి ఉంటాయి. వీటిని గృహబంధం అనీ, గృహప్రాణాలని శాస్త్రకారులు అంటారు.

1. ధ్వజం - పతాకం (జెండా) తూర్పుదిక్కు - ఇంద్రుడు అధిదేవత
2. ధూమం (పొగ) - ఆగ్నేయం - అగ్నిదేవుడు అధిదేవత
3. సింహం (సింహము) - యముడు - దక్షిణ దిక్కుకు యముడు అధిదేవత
4. శ్వానం (కుక్క) - నైఋతి, నిఋతి అధిదేవత
5. వృషభం (ఎద్దు) - పడమర - వరుణుడు పశ్చిమాధిపతి
6. ఖరమ్ (గాడిద) - వాయవ్యం - వాయువు - వాయవాధిపతి

7. గజం (ఏనుగు) - ఉత్తరము - కుబేరుడు - ఉత్తరదిగధిపతి

8. కాకం (కాకి) - ఈశాన్యం - ఈశ్వరుడు - ఈశాన్యాధిపతి

ధ్వజాయము ధనలాభాన్ని, ధూమ్రాయం సంతాపాన్ని, సింహాయం విశేషమైన భోగాలను, శ్వానాయం మహా పాపాన్ని, వృషభాయం ధన ధాన్యాభివృద్ధిని కలిగిస్తాయి. ఖరాయం, ద్రవ్య నాశనాన్ని, గజాయం మంగళ కార్యాల జయాన్ని, కాకాయం మరణాన్ని కలిగిస్తాయి.

దినం

అశ్విని మొదలు రేవతి వరకు గల 27 నక్షత్రాలు

నక్షత్ర ఫలము

ఆయాది సంఖ్యను 8చే గుణించి 27చే భాగించగా వచ్చిన శేషము నక్షత్రము

1. అశ్విని : సకలవిధములైన కార్యములు జయమగును
2. భరణి : నిర్మాణము పూర్తిచేయలేరు. కర్త మరణించును
3. కృత్తిక : అగ్నిభయము (దరిద్రం)
4. రోహిణి : జయాన్ని, సుఖసంతోషాలు కల్గించును
5. మృగశిర : శత్రునాశమును, జయమును కల్గించును
6. ఆరుద్ర : సకల సంపదలు కల్గించును
7. పునర్వసు : మృతభాగ్యము, నంపద కల్గించును
8. పుష్య : శాంతి, సౌఖ్యమును కల్గించును

9. ఆక్షేప : మరణావస్థలు కల్గించును
10. మఖ : భూతప్రేతముల నివాస మగును
11. పుబ్బ : చెడు ఫలితాలను కల్గించును
12. ఉత్తర : మిక్కిలి శ్రేష్ఠములు కల్గించును
13. హస్త : దినదినాభివృద్ధిని కల్గించును.
14. చిత్త : చెడు స్వభావము కల్గించును
15. స్వాతి : మిక్కిలి శుభాలు కల్గించును
16. విశాఖ : సంపద నశించును
17. అనూరాధ : సకల విధములైన సంపదలు కల్గించును
18. జ్యేష్ఠ : నష్టములు కల్గించును
19. మూల : ప్రేత, భూత నివాసములు, నష్టములు కల్గించును
20. పూర్వాషాఢ : కర్తమరణమును కల్గించును
21. ఉత్తరాషాఢ : ఆయుస్సు, ఆరోగ్యాన్ని కల్గించును
22. శ్రవణం : సౌఖ్యము, సుఖమును కల్గించును
23. ధనిష్ఠ : వ్రశాంతమైన జీవితాన్ని కల్గించును
24. శతభిషం : లక్ష్మీ కటాక్షము
25. పూర్వాభాద్ర : సంపదలు నశించును
26. ఉత్తరాభాద్ర : మిక్కిలిసంపద, ఆయువృద్ధిని కల్గించును
27. రేవతి : అన్ని కాలాలు మంచివే జరుగును

ఈ పైన చెప్పిన 27 నక్షత్రములందు అశ్విని, రోహిణి, ఆరుద్ర, పునర్వసు, ఉత్తర, స్వాతి,

అనూరాధ, ఉత్తరాషాఢ, శతభిషం, ఉత్తరాభాద్ర ఈ 10 నక్షత్రములు ఉత్తమములు, శ్రవణం, రేవతి, మధ్యమములు మిగిలినవి అధమములుగా గుర్తించవలయును.

వారం : ఆదివారము నుండి శనివారము వరకు 7 వారములు

వారఫలం : ఆయాది సంఖ్యను 9 చే గుణించి 7చే భాగించగా వచ్చినశేషం వారం

1. ఆదివారము : క్రోధాన్ని కలిగించును మధ్యమము అయినను పిత్రాణ్ణితసంపదను వృద్ధి చేయును
2. సోమవారము : లక్ష్మీ కటాక్షము
3. మంగళవారము: ధననష్టము, దుఃఖము కల్గించును
4. బుధవారము : మిక్కిలి ధననష్టాన్ని కల్గించును
5. గురువారము : పుత్రభాగ్యము ధనసంపద కల్గించును
6. శుక్రవారము : సకల కార్యములు సిద్ధించును
7. శనివారము : చోరభయము, దుఃఖము కల్గించును.

అంశం : అంశం అంటే గుణం, స్వభావం అనే విషయాన్ని చెబుతుంది. ఇవి 9 రకములు

1. తస్కర - దొంగ
2. భుక్తి - అనుభవించేది
3. శక్తి - శక్తి గలవాడు
4. ధన్యుడు - కీర్తిమంతుడు
5. నృప - రాజు

ప్రాసాద లక్షణం

6. క్లీబ - నపుంసకుడు
 7. నిర్భీతి - భయంలేనివాడు
 8. దరిద్ర్యం - దరిద్రుడు
 9. ప్రేష్యం - సేవనము

ఇందులో తస్కర, క్లీబ, దరిద్రం అనేవి మూడు మంచివికావు. మిగిలినవి మంచివి.

మానసూత్రం గ్రహించే విధానం -

నిర్మాణాలకు అవసరమైన పొడవు, వెడల్పులను బట్టి వైశాల్యం సాధిస్తే, దానిని క్షేత్రీ కృత పదం అంటారు. దానికే పదమని, పిండమని అందురు. ఒక్కొక్క నిర్మాణ విశేషానికి ఒక్కొక్క విధంగా కొలతలు చూడాలని శాస్త్ర గ్రంథాలు తెలియ జేస్తున్నాయి. దేవాలయాలకు, గోడలతో చేర్చి పొడవు వెడల్పులు గ్రహించాలని, నివాస గృహములు, పశు శాలలు, విశ్రాంతి గృహం, పాకశాల, పాఠశాల, వైద్యశాల, వివాహశాల మొదలగు వాటికి గోడలతో సంబంధంలేకుండా పొడవు వెడల్పులను గ్రహించాలని, దిగుడు బావులు, చెరువులు, భూగర్భ సంబంధాలైన నిర్మాణాలకు లోపలి లోతు కొలతలను గ్రహించి ఆయాది సాధనం చేయాలి.

ఆయాది గణిత విధానం :

కర్త నక్షత్రం, ^(శ్రావ) హస్తనక్షత్రం, స్వామి నక్షత్రంలను కనుగొని మూడింటిలో క్షేత్రీకృత పదాన్ని (స్థలము పొడవును వెడల్పుచే గుణించగా వచ్చిన పదం) 8 చే హెచ్చించి 27 చే భాగించగా ఆ పదానికి తగిన నక్షత్రం వస్తుంది. దీన్ని ఆయాది నక్షత్రం అంటారు. పై చెప్పిన, కర్త, వాస్తు, స్వామి నక్షత్రాలు నుండి లెక్కించి ఆయాది నక్షత్రానికి తారాబలం చూడాలి. ఆయాది నక్షత్రం యజమానికి విపత్తారైతే విపత్తులనిస్తుంది. ప్రత్యక్షార్థ ఐతే ప్రతికూల ఫలాన్నిస్తుంది. వైధనతార మృత్యుభయం

కలిగిస్తుంది. ఆయాది నక్షత్రం. యజమాని నక్షత్రం ఒకటైతే దోషంగా పరిగణింపబడుతుంది. యజమాని నక్షత్రం ఆయాది నక్షత్రానికి సంపత్, క్షేమ, సాధన, మిత్ర, తారలైతే శుభకరం. దీనిలో 23వ నక్షత్రమైన (ధనిష్ఠ) ప్రత్యక్షార్థ ఎప్పటికి పనికిరాదు. ఇతర పత్యక్షార్థల దోషం స్వల్పం.

పై గణితం వలన తెలిసినదేమంటే నిర్మాణము గాని, ప్రతిమగాని చేయబోయే ముందు కర్తకు, గ్రామానికి, స్వామి ముగ్గురికి తారాబలం చక్కగా కుదిరిందన్న విషయం నిశ్చయంగా చూడవలయునని తెలుస్తుంది. ఇలాగే తక్కిన విషయాలైన ఆయం, వ్యయం, వారం, యోని, అంశం అనే ఐదింటిని గణితం వేసి చూడాలి.

ఆయాది గణన విధానం : క్షేత్రీ కృత పదాన్ని 8చే హెచ్చింది 12చే భాగించగా వచ్చిన శేషం ఆయం (లేక) లాభం అవుతుంది.

క్షేత్రీ కృత పదాన్ని 9 చే హెచ్చింది 10చే భాగించగా వచ్చిన శేషం వ్యయం

క్షేత్రీ కృత పదాన్ని 3చే హెచ్చింది. 8చే భాగించగా వచ్చిన శేషం యోని

క్షేత్రీ కృత పదాన్ని 9చే హెచ్చింది. 7చే భాగించగా వచ్చిన శేషం వారం

క్షేత్రీ కృత పదాన్ని 4చే హెచ్చింది 9చే భాగించగా వచ్చిన శేషం అంశం

క్షేత్రీ కృత పదాన్ని 9 చే హెచ్చింది 120 చే భాగించగా ఆయుస్సు వస్తుంది.

పైన చెప్పిన ఆరు విషయాల్లో ముఖ్యంగా ధనం, ఋణం, యోని, నక్షత్రం, ఆయుర్ధాయం అనే ఐదు విషయాలు శ్రేష్ఠముగా ఉండాలి. వీటిలో ఏది మంచిది కాకపోయిన పదం శ్రేష్ఠంకాదు. మొత్తము ఫలంలో ధనం సంఖ్య ఋణం సంఖ్య

కంటే అధికముగా ఉండడం శుభప్రదం. ఆయుర్దాయం 60 కంటే అధికమైనచో శుభప్రదం. తక్కువైతే అశుభం. ఈ విధంగా పరిశీలించి మంచి పదాన్ని మాత్రమే గ్రహించవలయును.

ఆయాది గణితంలో ఆరు విధములైన పొంతనములు మంచివి ఎన్నుకున్నప్పటికి యోగం అనే విశేషాన్ని కనుక్కోవడం చాలా ముఖ్యం. యోగం అనేది 4 విధాలు. అవి 1. వియోగం 2. మరణం 3. నాశనం. 4. అమృతం.

మొదటి మూడు యోగాలు మంచివి కావు. నాల్గవదైన అమృత యోగం చాలా మంచిది.

యోగం కనుగొనే విధానం :

అశ్వినీ నుండి రేవతి వరకు ఉన్న నక్షత్రాలు 27. వీటిలో ఎప్పుడు అశ్వినీ నక్షత్రం మొదటి నక్షత్రంగా గుర్తిస్తాము. కాని ఈ యోగ ఫలితం గణించేటప్పుడు విశాఖ నక్షత్రంను మొదటి నక్షత్రంగా ఎంచుకొని విశాఖ మొదలు మూల నక్షత్రం వరకు నాలుగు నక్షత్రాలను ఒక్కొక్క గుంపుగా ఎంచితే మొత్తం 7 గుంపులు వస్తాయి. వాటిని వరుసగా మొదటి గుంపు ఆదివారము, రెండవ గుంపు సోమవారము అని చెబుతూ ఏడవది శనివారము అని జ్యోతిష మార్గములో గణిస్తారు. పైన చెప్పబడిన విషయాన్ని నాలుగు యోగాలతో

22
కలిపి చూపించడం కద్దు. ప్రతి వారానికి ఏయే నక్షత్రం ఏయే యోగానిస్తుందో ఈ క్రింది పట్టిక సులభముగా చూపిస్తుంది.

అమృత యోగం ఉత్తమం :

ఆయాది గణితంలో వారాల్లో బుధవారం ఉత్తమమైనది. ఇప్పుడు బుధవారం తీసుకుంటే ఆనాడు రేవతి నక్షత్రం వస్తే వియోగం అవుతుంది. తర్వాత అశ్వినీ వస్తే మరణం. భరణి వస్తే నాశం, కృత్తిక వస్తే అమృత యోగం అవుతుంది. ఇవిగాక మిగిలిన నక్షత్రాలు సిద్ధయోగము అవుతుంది. సిద్ధయోగం స్వీకరించవచ్చు. ఆయాది శోధనవల్ల మంచి కొలతలు, మంచి ఫలితాలు సాధించవచ్చు. గర్భ గృహం, ద్వారం, మండపం, గోపురం, ప్రాకారం, స్తంభం ధ్వజస్థానం మొదలైన నిర్మాణాల న్నింటిని ఈ గణితం ప్రకారం పొంతనము చేసిచూసి మంచి క్షేత్రీ కృత పదాలు కనుగొని నిర్మాణములు చేయవలయును.

ఆయాదిగణిత విధానము :

గర్భగృహము యొక్క మానసూత్రమునకు ఒక ప్రమాణము తీసుకొని దానికి సరిపడిన ఆయాది విధానం ఎలా గణించాలో చూద్దాము.

1. ఆలయనిర్మాణము చేయు కర్త జన్మ నక్షత్రము

వారం	వియోగం	మరణం	నాశం	అమృతం	మిగిలిన నక్షత్రాలు సిద్ధయోగం
ఆదివారం	విశాఖ	అనూరాధ	జ్యేష్ఠ	మూల	
సోమవారం	పూర్వాషాడ	ఉత్తరాషాడ	ఆశ్విని	శ్రవణం	
మంగళవారం	ధనిష్ఠ	శతభిషం	పూర్వాభాద్ర	ఉత్తరాభాద్ర	
బుధవారం	రేవతి	అశ్వినీ	భరణి	కృత్తిక	
గురువారం	రోహిణి	మృగశిర	ఆరుద్ర	పునర్వసు	
శుక్రవారం	పుష్యమి	ఆశ్లేష	మఖ	పుబ్బ	
శనివారం	ఉత్తర	హస్త	చిత్త	స్వాతి	

ప్రాసాద లక్షణం

శ్రీలక్ష్మి - వస్త్ర
కాశీరాజు నామ - వస్త్ర
శ్రీరాజు / రామకృష్ణస్వామి - వస్త్ర
శ్రీరాజు హరిద్రాస్వామి - వస్త్ర

23

2. గ్రామ నక్షత్రము దీన్నే వాస్తు నక్షత్రమని అంటారు

3. స్వామి నక్షత్రము ఏదేవుని విగ్రహానికి ఆలయము నిర్మిస్తామో ఆదేవుని జన్మనక్షత్రం

పై మూడింటిలో మొదటిదైన కర్తయొక్క జన్మ నక్షత్రము అన్నప్పుడు యజమాని నామనక్షత్రాన్నే తీసుకోవాలి. ఒక్కొక్క గ్రామం, నగరం, పట్టణము ఏదో ఒక చెప్ప బడ్డసమయాన, చెప్పబడ్డ నక్షత్రంలో ఉంటే దాన్నే గ్రహించాలి. లేకుంటే గ్రామము పేరులో మొదటి అక్షరాన్ని తీసుకోవాలి.

ఏయే మూర్తికి ఏయే నక్షత్రమో మనకు ఋషులు అందించిన విషయాలు శిల్పాగమ గ్రంథాలలో చూడవచ్చు. అలా కొన్నింటికి లేని యెడల ఆదేవుని పేరులో మొదటి అక్షరంబట్టి నామ నక్షత్రం తెలుసుకొని దానితోనే గణితం చేయాలి.

శివలింగ నక్షత్రాలు :

స్వయంభూలింగానికి ఆరుద్రానక్షత్రం
దైవీకలింగానికి పుష్యమీనక్షత్రం
ఆర్ష లింగానికి స్వాతి నక్షత్రం
అసురలింగానికి ఉత్తరానక్షత్రం
మానుష లింగానికి అనూరాధనక్షత్రము

దేవతల జన్మనక్షత్రాలు :

గణపతి : శతభిషం
సుబ్రహ్మణ్య / షణ్ముఖ : కృత్తిక
స్కంద - మురుగ : విశాఖ
శివుడు : ఆరుద్ర
బ్రహ్మ : రోహిణి
కృష్ణుడు : రోహిణి
విష్ణువు : శ్రవణం

రాముడు : పునర్వసు
శని : భరణి
భగవతి / పార్వతి : పూర్వాషాఢ
కాళి : కృత్తిక
దుర్గ / సరస్వతి : స్వాతి
లక్ష్మీ : ఉత్తర
భూదేవి : విశాఖ
చండేశ్వరుడు : స్వాతి
క్షేత్రపాలకుడు : మృగశిర
చంద్రుడు : రోహిణి
ఆదిత్యుడు : మఖ
వీరభద్రుడు : భరణి
శాస్తా : ఉత్తర
గరుడ / హనుమంతుడు : స్వాతి
వామన : శ్రవణం
మత్స్యావతారం : రేవతి
కూర్మావతారం : కృత్తిక
వరాహావతారం : మూల
నరసింహావతారం : స్వాతి
పరశురామావతారం : మృగశిర
శ్రీధర : మూల
జ్ఞాని : హస్త
బలరామ : ఆరుద్ర
కల్కి : ఉత్తర

కర్త నక్షత్రము, వాస్తునక్షత్రం, స్వామినక్షత్రం, అనే ఈ మూడు కలిపి, ఈ మూడింటిలో ఆలయానికి తగిన ప్రమాణానికి తగిన పొంతనతో యుండే కొలతను గ్రహించాలి.

ప్రోడక్షన్ ఆర్కైవ్స్ ఫౌండేషన్లు

24

Scanned by CamScanner

వాస్తు పురుషుని గమనమంతా సూర్యగమనం మీద ఆధారపడి ఉంది. 'ఆరోగ్యం భాస్కరాదిచ్ఛేత్' అనే నానుడిని అనుసరించి ఆరోగ్యం సూర్యుని వల్ల వస్తుంది అని అర్థం. అతీంద్రియ జ్ఞాన సంపన్నులైన మన మహర్షులు సూర్యుని యొక్క గమనం వలన భూమిపై ఏ విధంగా సూర్యశక్తి నిక్షిప్తమౌతుందో గ్రహించి వాస్తు పురుషుని రూపంలో మనకు అందించారు. అటువంటి వాస్తుపురుషుడు భూమిపై నిర్మించే గృహాలకు ముఖద్వారాన్ని అనుసరించి (అనగా దిశలనుసరించి ఉండే అయస్కాంత శక్తులను) ఆయా శక్తులను ప్రసాదిస్తూ ఉంటాడు. కాబట్టి గృహంలో ఉండే వాళ్ళు సుఖ శాంతులతో ఉండాలంటే ఈ వాస్తు పురుష పరిజ్ఞానాన్ని బాగుగా అవగతం చేసుకొని గృహ నిర్మాణం చేస్తే సుఖాన్ని శాంతి పొందుతారు.

వాస్తుపదాలు

వేదాంగాలలో ఒకటైన జ్యోతిషాస్త్రాంతర్భాగమే వాస్తుశాస్త్రం. జ్యోతిషానికి వాస్తువునకు ప్రతిపత్తి ఆధునిక కాలంలో ఎక్కువైంది. మానవుడు సుఖసంపదలతో, ఆయురారోగ్యాలతో చిరకాలం ఆనందించడానికి అతని నివాసం వాస్తు శాస్త్రంలో చెప్పబడ్డ శుభలక్షణాలతో నిర్మించబడాలి. శాస్త్రవిరుద్ధ నిర్మాణాలలో నివసించేవారు. ఇబ్బందులు పడుతుంటారు. అందువల్ల దోష సవరణలు చేసి గృహాన్ని నిర్మించుకోవడం శ్రేయస్కరం. గృహనిర్మాణ శాస్త్రంగా వాస్తు శాస్త్రం ప్రసిద్ధి పొందింది. ఈ శాస్త్రాన్ని ప్రాచీనులైన విశ్వకర్మ, మయూడు, త్వష్ట, కశ్యపుడు, భరద్వాజుడు, భృగువు, మానసారుడు, అగస్త్యుడు మొదలైన వారు లోకకళ్యాణమే పరమావధిగా భావించి నూత్రాలను రూపొందించి భావితరాలవారికి అందజేసినారు.

నిర్మాణమునకు ముందు స్థలాన్ని వివిధ భాగాలుగా విభజించే పద్ధతిని పదవిభజన, పదవిన్యాసం అందురు. మయమత శిల్పశాస్త్రము నందు 32 వాస్తు పదములు చెప్పబడినాయి.

- | | |
|-------------------|-------------------|
| 1. సకలం, | 2. పేచకం, |
| 3. పీఠం, | 4. మహాపీఠం, |
| 5. ఉపపీఠం, | 6. ఉగ్రపీఠం, |
| 7. స్థండిలం, | 8. మండూకం, |
| 9. పరమశాయికం, | 10. ఆసనం, |
| 11. స్థానీయం, | 12. దేశీయం, |
| 13. ఉభయచండితం, | 14. భద్రమహాసనం, |
| 15. పద్మగర్భం, | 16. త్రియుతం, |
| 17. వ్రతభోగం, | 18. కర్ణాష్టకం, |
| 19. గణితపాదం, | 20. సూర్యవిశాలం, |
| 21. సుసంహితం, | 22. సుప్రతీకాంతం, |
| 23. విశాలం, | 24. విప్రగర్భం, |
| 25. విశ్వేశం, | 26. విపులభోగం, |
| 27. విప్రతీకాంతం, | 28. విశాలాక్షం, |
| 29. విప్రభక్తిం | 30. విశ్వేశసారం, |
| 31. ఈశ్వరకాంతం, | 32. ఇంద్రకాంతం |

గ్రామ, నగర, పుర, పట్టణ, గృహ, భవన, ప్రాసాదాదినిర్మాణ విశేషాలను బట్టి ఆయానిర్మాణాల నిమిత్తం స్వీకరించబడ్డ భూమి చతురస్రంగా కాని, దీర్ఘచతురస్రంగాగాని, వృత్తంగా కాని, త్రికోణంగా కాని, అష్టాశ్రమంగా కాని ఏవిధంగా ఉన్నప్పటికీ దానిని సమాన భాగాలుగా విడదీసే పద్ధతిని పదం అంటారు.

నిర్మాణాలకు స్వీకరించబడ్డ భూమి మొత్తానికి సకలమనిపేరు. భూమికి ఈశాన్యం నుండి అగ్నేయం వరకు మొదటి సూత్రాన్ని, అగ్నేయం

నుండి నైరుతికి రెండవ సూత్రాన్ని, నైరుతి నుండి వాయవ్య దిక్కుకు మూడవసూత్రాన్ని వాయవ్య దిక్కు నుండి ఈశాన్య దిక్కువరకు నాల్గవ సూత్రాన్ని కట్టాలి. ఈ విధంగా సూత్రాల మధ్యనున్న భూమి 'సకలం'. స్థలాన్ని నాలుగు సమభాగాలుగా చేస్తే ఏర్పడేది 'పేచకం'. స్థలాన్ని $(3 \times 3 = 9)$ తొమ్మిది సమానభాగాలు చేస్తే 'పీఠం'. పదహారు సమభాగాలు చేస్తే మహాపీఠం.

- 25 సమభాగాలు చేస్తే ఉపపీఠం
- 36 సమభాగాలు చేస్తే ఉగ్రపీఠం
- 49 సమభాగాలు చేస్తే స్థండిలం
- 64 సమభాగాలు చేస్తే మండూకం (చతుషష్ఠిపదం)
- 81 సమభాగాలు చేస్తే పరమశాయి (ఏకాశీతిపదం)
- 100 సమభాగాలు చేస్తే ఆసనం (శతపదవాస్తు)
- 121 సమభాగాలు చేస్తే స్థానీయం
- 144 సమభాగాలు చేస్తే దేశీయం
- 169 సమభాగాలు చేస్తే ఉభయచండితం
- 196 సమభాగాలు భద్రమహాసనం
- 225 సమభాగాలు చేస్తే పద్మగర్భం
- 256 సమభాగాలు చేస్తే త్రియుతం
- 289 సమభాగాలు చేస్తే వృత్తభోగం
- 324 సమభాగాలు చేస్తే కరాష్టకం
- 361 సమభాగాలు చేస్తే గణికపాదం
- 400 సమభాగాలు చేస్తే సూర్యవిశాలం
- 441 సమభాగాలు చేస్తే సుసంహితం
- 484 సమభాగాలు చేస్తే సుప్రతీకాంతం
- 529 సమభాగాలు చేస్తే విశాలం
- 576 సమభాగాలు చేస్తే విప్రగర్భం
- 625 సమభాగాలు చేస్తే విశ్వేశం
- 676 సమభాగాలు చేస్తే విపులభోగం
- 729 సమభాగాలు చేస్తే విప్రతీకాంతం

- 784 సమభాగాలు చేస్తే విశాలాక్షం
- 841 సమభాగాలు చేస్తే విప్రభక్తికం
- 900 సమభాగాలు చేస్తే విశ్వేశసారం
- 961 సమభాగాలు చేస్తే ఈశ్వరకాంతం
- 1024 సమభాగాలు చేస్తే ఇంద్రకాంతం

వాస్తు పదాన్ని ఉపయోగించే ప్రదేశాలు :

మొదటిదైన ఏకపదవాస్తువు (సకలం) యతీశ్వరుల గృహాలు, ఆసనాలు, భోజన పాత్రలు, అగ్ని కార్యానికి చెందిన చతురస్రవేది నిర్మాణాలు, పితృదేవగణాది యజ్ఞాలు, గరుపూజన పీఠములకు ఉపయోగించాలి. బ్రహ్మ ఈపదంలో సర్వదేవతా స్వరూపుడుగా నివసిస్తాడు. చతుష్పదమైన (పేచిక) వాస్తువును వివాహం, యాత్రాదులలో గ్రహించబడే దీక్షల విషయంలో గ్రహించాలి. నవపదం (పీఠం) వనప్రవేశనాదికార్యాల్లోను, షోడశపదం (మహాపీఠ) మండపనిర్మాణాలకు, దైవసంబంధాలైన దీక్షా కార్యాలకు గ్రహించాలి.

షట్టింశత్పదమైన 32 (ఉగ్రపీఠం) వాస్తువును శుభకర్మలందు గ్రహించాలి ఏకోన పంచాశత్పదమైన (స్థండిలం) వాస్తువును సమస్త జీర్ణోద్ధారణ విషయము లందు, చతుష్పష్టి పదమైన (మండూక) వాస్తువును గ్రామ, నగర, రాజనగర, నిర్మాణాలందు, రాజగృహనిర్మాణాదులందు గ్రహించాలి. ఏకాశీతి పద వాస్తువును సమస్త నివాస గృహాలకు సాధారణ జనవాసాలకు గ్రహించాలి. శతపదమగు (ఆసన) వాస్తువును మండపముల కోసం గ్రహించాలి. నూట తొంబదియారు పదవిభాగం గల (భద్రమహాసన) వాస్తువును వాపి, కూప, తటాకాది నిర్మాణాలకు గ్రహించాలి. వాస్తు పదాలన్నింటిలోను ఏకాశీతి పదము, శతపదము, చతుష్పష్టి పదము అనేవి ముఖ్యముగా పరిగణించబడుతున్నాయి.

వికాశీతి 81 పదవాస్తు :

నిర్మాణానికి తీసుకున్న స్థలాన్ని చతురస్రంగా చేసి తర్వాత 81 సమాన విభాగాలుగా విడదీయాలి. మధ్యలోని 9 భాగాలు 'బ్రహ్మ' స్థానం అనబడతాయి. బ్రహ్మ స్థానానికి తూర్పున గల 6 పదాలు ఆర్యము అంటారు. ఆగ్నేయకర్ణము నందు సవిత, సావిత్రి అనే 2 దేవతలకు రెండు పదాలుంటాయి. బ్రహ్మ స్థానానికి దక్షిణం వైపు ఆరు పదాలు 'వివస్వాన్' భాగం, నైఋతి కర్ణంలో జయ, ఇంద్ర అనే దేవతలకు రెండుపదాలుంటాయి. బ్రహ్మస్థానానికి పశ్చిమంలో 6 పదాలు మిత్రభాగం వాయవ్య భాగంలో యక్ష, రుద్ర అనే దేవతలకు 2 పదాలుండాలి. బ్రహ్మ స్థానానికి ఉత్తరాన ఆరు పదాలు పృథ్వీ ధర భాగం. ఈశాన్య కర్ణంలో ఆపః ఆపవత్సలనే ఇద్దరు దేవతలకు రెండు పదాలు గ్రహించాలి. ఇవన్నీ అంతర్భాగాలు. బహిర్భాగ

దేవతల వివరాలు ఈ విధంగా ఉన్నాయి. ఈ దేవతా స్థితి ఈశాన్య దిక్కుతో ప్రదక్షిణ క్రమంగా ఉత్తరపు దిక్కుతో సమాప్తం అవుతుంది. అటువంటి దేవతలు ఒక్కో దిక్కుకు 8 మంది చొప్పున 4 దిక్కులలో మొత్తం 32 దేవతలు అవుతారు. వీరు ఒక్కో పదంలో ఒక్కొక్కరు ఉంటారు. వాని వరుస ఈ క్రింది విధంగా ఉంటుంది.

1. ఈశ, 2. పర్జన్య, 3. జయంత, 4. ఇంద్ర, 5. రవి, 6. సత్య, 7. భృశ, 8. సభ, 9. అగ్ని, 10. పూష, 11. వితథ, 12. గృహక్షత, 13. యమ, 14. గంధర్వ, 15. భృంగరాజ, 16. మృగ, 17. పితృగణ, 18. దౌవారిక, 19. సుగ్రీవ, 20. పుష్పదంత, 21. జలేశ్వర, 22. అసుర, 23. శోష, 24. పావయక్ష, 25. రోగ, 26. నాగ, 27. ముఖ్య, 28. భల్లాట, 29. సోమ, 30. చరక, 31. అదితి, 32. దితి

వా

ఉ

ఈ

ప

తూ

నై

ద

ఆ

రోగ	నాగ	ముఖ్య	భల్లాట	సోమ	చరక	అదితి	దితి	ఈశాన		
పావ యక్ష	రాజ యక్ష		పుట్టిధర				ఆపః	పర్జన్య		
శోష		రుద్ర					ఆప వత్స		జయంత	
అసుర	మిత్ర	బ్రహ్మ	అర్యమ	ఇంద్ర	రవి	సత్య	భృశ	నభ		
వరుణ										
పుష్ప దంత										
సుగ్రీవ		జయ			వివస్వాన్			సావిత్రి		
దౌవారిక	ఇంద్ర								సవిత	
పితృ గణ	మృగ	భృంగ రాజ	గంధర్వ	యమ	గృహ క్షత	వితథ	పూష	అనిల		

చతురస్రంగా స్థలం ఉన్నప్పుడు ఆభాగం చతురశ్రైకాశీతి పదవాస్తు అని, దీర్ఘ చతురస్రంగా ఉన్నప్పుడు దీర్ఘ చతురశ్రైకాశీతి పదవాస్తు అని వ్యవహరింపబడుతుంది.

శతపదవాస్తువు :

నిర్మాణానికి స్వీకరించబడిన భూమిని చతురస్రమముగాచేసి $10 \times 10 = (100)$ భాగాలుగా విభజించాలి. దీని మధ్య భాగంలో 16 భాగాలు బ్రహ్మధికారంలో ఉంటాయి. తూర్పున ఆర్యమునకు 8 భాగాలు, దక్షిణమున సూర్యునికి 8 పదాలు, పశ్చిమంలో మిత్రునికి 8 భాగాలు, ఉత్తరములో పృథ్వీధరునికి 8 భాగాలు, పదభోగమవుతాయి. సవిత్రాది దేవతలు ఏకాశీతి పదవాస్తువులో లాగే అధికారం కలిగిన వారవుతారు. అగ్ని, అంతరిక్ష, వాయు, మృగ, పితృగణ, రోగ, అదితులనే వారు $11\frac{1}{2}$, పదం చొప్పున ఆక్రమించి వుంటారు. పర్జన్యుడు మొదలైన దేవతలు ఒక్కొక్కరు ఒక్కొక్క భాగాన్ని ఆక్రమించి ఉంటారు. శతపదవాస్తువులో

బ్రహ్మకు

16 భాగాలు

ఆర్యముడు సూర్యుడు, మిత్రుడు, పృథ్వీధరుడు 32 భా||

ఈశాన, ఆకాశ, అనిల, మృగ, పితృ,
పాపయక్ష, రోగ, దితి - ఎనమండుగురికి

(1కి $11\frac{1}{2}$ భాగముచొప్పున)

12 భా||

ఆపః ఆపవత్స, సావిత్ర సవిత,

ఇంద్ర ఇంద్రజయ, రుద్రదాన, రుద్ర

- ఎనమండుగురకు

(1కి రెండు చొప్పున)

16 భా||

పర్జన్యాది దేవతలకు

24 భా||

చతుష్ఠస్థి పదవాస్తువు :

నిర్మాణానికి స్వీకరించిన స్థలం 64 సమభాగాలు చేస్తే అది చతుష్ఠస్థి పదం అవుతుంది. ఈ పదంలో దేవతాన్యాసం క్రింది విధంగా ఉంటుంది. బాహ్యవరణంలో 32 దేవతలు, అంతర్గత ద్వితీయావరణంలో నాలుగు కోణాలలో ఒక్కొక్క కోణంలో ఇద్దరు దేవతలు చొప్పున 8 దేవతలు, దిగ్భాగంలో నాలుగు దేవతలు, సర్వ మధ్య

తూ

శిఖి	దితి	వర్జన్య	జయన్త	ఇంద్ర	సూర్య	సత్య	భృశ	ఆకాశ	భిక్షు
దితి	ఆపః	ఆపః	ఆర్యమ	ఆర్యమ	ఆర్యమ	ఆర్యమ	సావిత్ర	సావిత్ర	అనిల
ఆపః	ఆపః	ఆర్యమ	ఆర్యమ	ఆర్యమ	ఆర్యమ	ఆర్యమ	సావిత్ర	సావిత్ర	అనిల
అదితి	ఆపవత్స	ఆపః	ఆర్యమ	ఆర్యమ	ఆర్యమ	ఆర్యమ	సావిత్ర	సావిత్ర	పూష
భుజగ	వృధీ	వృధీ	బ్ర	హ్మ	బ్ర	హ్మ	సూర్య	సూర్య	విశధ
సోమ									గృహ
భల్లాట									క్షత
ముఖ్య	వృధీ	వృధీ	బ్రహ్మ	బ్రహ్మ	బ్రహ్మ	బ్రహ్మ	సూ	ర్య	గంధ
నాగ	రుద్ర	రుద్ర	మిత్ర	మిత్ర	మిత్ర	మిత్ర	ఇంద్ర	ఇంద్ర	భృంగ
రోగ	రుద్ర	రుద్ర	మిత్ర	మిత్ర	మిత్ర	మిత్ర	జయ	ఇంద్ర	జ
రోగ	పాప	శోష	అసుర	వరుణ	పుష్ప	సుగ్రీవ	దౌవా	పితృ	పితృ
యక్ష	యక్ష	యక్ష	యక్ష	యక్ష	యక్ష	యక్ష	యక్ష	యక్ష	యక్ష

ప

ప్రాసాద లక్షణం

భాగంలో నాలుగు పదాలు బ్రహ్మపద భోగం కలిగిన వారవుతారు. ఈ వాస్తువులో బ్రహ్మకు 4 పదాలు, ఆర్యమునకు 3 పదాలు, వివస్వానుకు 3 పదాలు, మిత్రునికి 3 పదాలు, పృథ్వీధరునకు 3 పదాలు ఉంటాయి, అంతః కోణంలో నాలుగు విదిక్కులలోను సావిత్ర 1/2 పదం, సవిత 1/2 పదం, 1 పదం ఆగ్నేయం, ఇంద్రపదం 1/2, ఇంద్రజయ పదం 1/2. 1 పదం నైఋతి యందు, రుద్ర 1/2, పదం రుద్రజయ 1/2, 1 పదం వాయువ్యమునందు అపః 1/2, పదం ఆపవత్స 1/2 పదం మొత్తము 1 పదం ఈశాన్యమున ఉంటాయి. బాహ్యవరణంలో ఈశాన్యమునుండి నాలుగు కోణాలలో అదితి 1/2, పదం, ఈశ 1/2 పదం మొత్తం 1 పదం, ఈశాన్యం అగ్ని 1/2, పదం, అంతరిక్ష 1/2 పదం 1 పదం ఆగ్నేయం

మృగ 1/2 పదం, పితృగణ 1/2 పదం నైరుతిలో, రోగ 1/2 పదం, పవన 1/2 పదం వాయువ్యములో ఈ విధంగా బాహ్య కోణంలో 28 పదాలలో 32 దేవతలు వరుసగా ఉంటారు.

పదవిన్యాసము ఆధారంగా ద్వార నిర్ణయం :

సర్వ విధములైన ఆలయాలకు, ప్రాకారాలకు, మండపాలకు నలువైపుల ప్రధాన ద్వారములు (సింహద్వారం) కల్పించవలయును, చిన్న ద్వారములను దాని ఉపయోగాన్ని బట్టి అమర్చవచ్చు, ప్రధాన దిక్కులందు అమర్చు ద్వారమును సింహద్వారమని, ప్రక్కలందు అమర్చు ద్వారములకు ఉపద్వారములని శిల్ప శాస్త్రములందు చెప్పబడింది. ఆలయాలందు అంతఃరాలము మధ్యలో ద్వారము చేయచ్చు పాకశాల మొదలగు

ఈ చరకి		తూ శరస్కంధ						విధారి
ఉత్తర పశ్చిమ తూర్పు దక్షిణ	ఈశ	వర్జన్య	జయన్త	మహేశ	ఆదిత్య	సత్య	భృశ	అంతరిక్ష
	అదితి	ఆపవత్స					సావిత్రి	అగ్ని
	అపః						సవిత	పూష
	అర్గళ	వృ	అ	ర్య	మా		వితథ	
	సోమ	ధీ	బ్రహ్మ			వి	గృహ	ఆ
	భల్లాట	ధర				వ	క్షత	ర్య
	ముఖ్య	మి	త్ర			స్వాన్	యమ	మ
	నాగ	రుద్ర					గంధ	
వా	పవన	శోష	అసుర	వరుణ	పుష్ప	ఇంద్ర	భృంగ	పు
	రోగ	శోష	అసుర	వరుణ	పుష్ప	ఇంద్ర	భృంగ	పు
పాపరాక్షసి		జ్యంభక						నై
		ప						

ప్రాసాద లక్షణం

వాటికి గదిమధ్య భాగములోనే ద్వారము కల్పించాలి. నాల్గువైపుల మూయబడిన ఆలయములకు ఈశాన్య భాగములో ద్వారమును కల్పించవచ్చు. ఉదా॥ తమిళనాడులోని శ్రీరంగం ప్రక్కన తిరువనైక్కావల్ జంబుకేశ్వర స్వామి ఆలయం మొదటి ప్రాకారములో చేసి యుండుట చూడవచ్చు. మయమత శిల్పశాస్త్రం ప్రకారం 32 దేవతా పదాలలో మహేంద్ర, గృహక్షత, పుష్పదంత, భల్లాట అనే నాలుగు పదాలలో మాత్రమే ప్రధాన ద్వారం శ్రేష్ఠమని మిగిలిన పదాలన్నింటిలో ప్రధాన ద్వారం పెట్టడం దోషమని, అంతద్వారం కూడా పై పదాలలో మాత్రమే పెట్టాలని చెప్పబడింది.

ఒకే దిశలో ప్రధాన ద్వారం, ఉపద్వారం నిర్మించదలచినపుడు తూర్పుదిక్కు మహేంద్ర పదంలో ప్రధాన ద్వారం, భృశ, పర్జన్య పదాలలో ఉపద్వారములను పెట్టాలి. దక్షిణ దిక్కుకు గృహక్షతపదంలో మహాద్వారం భృంగరాజ, పూషపదాలలో ఉపద్వారములు పెట్టాలి. పశ్చిమవైపు

పుష్పదంతమందు మహాద్వారం దౌవారిక, శోషపదాలలో ఉపద్వారాలు నిర్ణయించాలి. ఉత్తరము వైపు భల్లాట పదంలో మహాద్వారం నాగ, దితి పదాలలో ఉపద్వారములను నిర్ణయించాలి. ఈ విధంగా వాస్తు పదవిన్యాసం చేసి అందులో నిర్మించదగిన అంశాలను జాగ్రత్తగా నిర్మిస్తే అందులో నివసించేవారు సుఖ జీవనాన్ని ఆనందాన్ని అనుభవించగలరు.

ప్రస్తుతకాలంలో పదం కట్టిన నిర్మాణం ఎవరూ చేయట్లేదు. వాస్తులోని విజ్ఞానాన్ని చెప్పేవారు, ఆదరించేవారూ ఈనాడు కనపడటంలేదు. ఈ రకమైన విభాగాలు చేసి గృహాలు నిర్మించే విధానాలు ప్రాచీన వాస్తు శాస్త్రగ్రంథాలన్నింటిలోనూ చెప్పబడ్డాయి. ఆ విధానాలు ఆచరించి ఆరోగ్య వంతమైన, ఆనందపు జీవితాన్ని గడపడం సర్వ విధాలా శ్రేయస్కరం.

వాస్తు పురుషుడు మెలుకువగా యున్న సమయము										
వాస్తు పురుషుడు నిద్రలేచు సమయము			సూర్యోదయము		నిద్రలేచే సమయం	దంతదావన సమయం	స్నాన సమయం	పూజా సమయం	భోజన సమయం	దీనికిపై 3/4 ఘడియలు 18 ని॥ తాంబూలము వేయుసమయం, ఈ సమయములోనే ఆలయ ముహూర్తము చేయవలయును
మాసము	రోజు	సమయం	గం॥	ని॥	గం॥	ని॥	ఘడియలు ని॥	ఘడియలు ని॥	ఘడియలు ని॥	ఘడియలు ని॥
చిత్తిరై (మేషం)	10	05	6 - 04	ఉ॥	8.04	3/4 - 18	3/4 - 18	3/4 - 18	3/4 - 18	ఉ॥ 9 గం॥ 16ని॥ నుండి 9.34 ని॥ లోపు
వైగాసి (వృషభం)	21	08	5 - 53	ఉ॥	9.05	3/4 - 18	3/4 - 18	3/4 - 18	3/4 - 18	ఉ॥ 10గం॥ 17ని॥ నుండి 10.35ని॥ లోపు
ఆడి (కర్కాటకం)	11	02	6 - 04	ఉ॥	6.52	3/4 - 18	3/4 - 18	3/4 - 18	3/4 - 18	ఉ॥ 8గం॥ 4ని॥ నుండి 8.22 ని॥ లోపు
ఆవణి (సింహం)	06	21	6 - 07	మ॥	2.31	3/4 - 18	3/4 - 18	3/4 - 18	3/4 - 18	మ॥ 3.43 ని॥ నుండి 4.01 ని॥ లోపు
బహుసి (తుల)	11	02	6 - 07	ఉ॥	6.55	3/4 - 18	3/4 - 18	3/4 - 18	3/4 - 18	ఉ॥ 8గం॥ 7ని॥ నుండి 8.25ని॥ లోపు
కార్తీకై (పుష్యం)	08	10	6 - 14	ఉ॥	10.14	3/4 - 18	3/4 - 18	3/4 - 18	3/4 - 18	ఉ॥ 11గం॥ 26ని॥ నుండి 11.44 ని॥ లోపు
తై (మకరం)	12	08	6 - 40	ఉ॥	9.52	3/4 - 18	3/4 - 18	3/4 - 18	3/4 - 18	ఉ॥ 11గం॥ 04ని॥ నుండి 11.22ని॥ లోపు
మాసి (కుంభం)	22	08	6 - 30	ఉ॥	9.42	3/4 - 18	3/4 - 18	3/4 - 18	3/4 - 18	ఉ॥ 10.54ని॥ నుండి 11.12ని॥ లోపు

ప్రాసాద లక్షణం

ఏవంతు జాతిశాలించ కుర్యాద్ధర్మపశాత్పుధి!
 కేచకం మూలహర్యేతు చందాదీనాం ప్రవక్ష్యతే॥
 ప్రథమంతు మహావీరం ద్వితీయం మండూకం పదమే॥
 తృతీయం భద్రసంయుక్తంతతః శాలా బహిస్తథా॥
 చతుర్థం సుప్రతీకాంతం పంచమంచేంద్రకాంతకమ్॥

గర్భగృహము $2 \times 2 = 4$ (పేచకపదం)

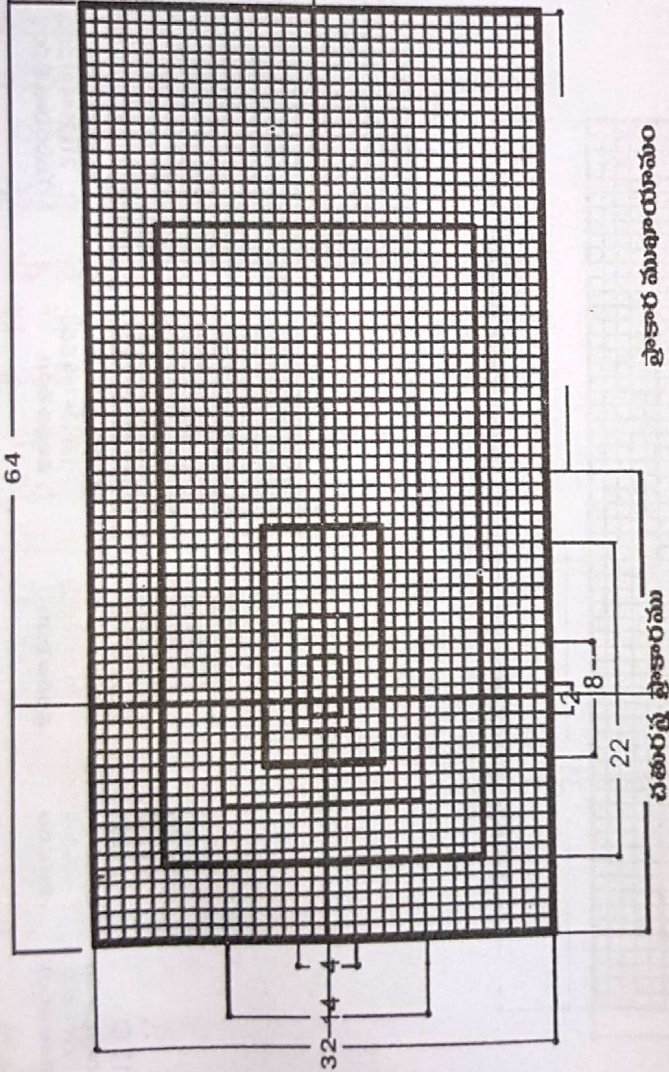
మొదటిప్రాకారము $4 \times 4 = 16$ (మహావీరపదం)

రెండవప్రాకారం $8 \times 8 = 64$ (మండూకపదం)

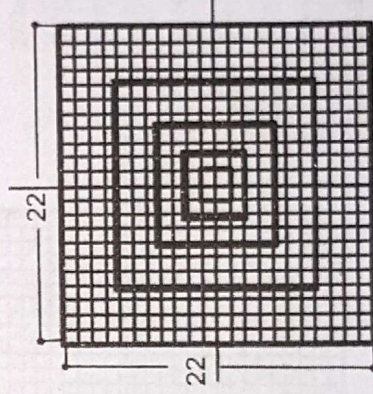
మూడవప్రాకారం $14 \times 14 = 196$ (భద్రమహాసనపదం)

నాల్గవప్రాకారం $22 \times 22 = 484$ (సుప్రతీకాంత పదం)

ఐదవప్రాకారం $32 \times 32 = 1024$ (ఇంద్రకాంత పదం)



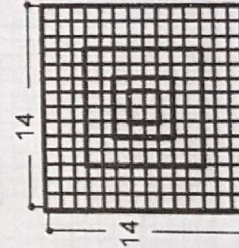
ప్రాకార ముఖాయామం



నాల్గవ ప్రకారం

$22 \times 22 = 484$

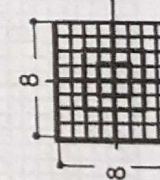
సుప్రతీకాంత పదం



మూడవ ప్రకారం

$14 \times 14 = 196$

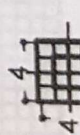
(భద్రమహాసన పదం)



రెండవ ప్రకారం

$8 \times 8 = 64$

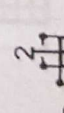
(మండూక పదం)



మొదటి ప్రకారం

$4 \times 4 = 16$

(మహావీర పదం)



గర్భగృహము

$2 \times 2 = 4$

(పేచక పదం)

ప్రాకార లక్షణము

144

ఆలయములు చుట్టూ హద్దులు నిర్ణయించి
ఆ హద్దుల మీద నిర్మాణము చేయు గోడలను
ప్రాకారములు అందురు.

శ్లో॥ అధాతస్సప్రవక్ష్యామి ప్రాకారాణాంతు లక్షణమ్
సర్వేషామసి హర్మాణాం బాహ్యే బాహ్యేతు కుడ్యకమ్
రక్షార్థం విమానానాం శోభార్థంచ తథాదునా!
పరివార నివేశార్థం ప్రాకారం ప్రోచ్యతేబుధైః
(మయమతము)

విమానముల రక్షణకు, శోభ కొరకు,
పరివారములను నిలుపుటకు ప్రాకారము
అవసరమని చెప్పారు.

శ్లో॥ శోభార్థం ఉన్నతార్థంవా ప్రాకారం కారయేత్బుధః
(విశ్వకర్మీయం)

ప్రాకారములు ఆలయభద్రత కొరకు, అందము
కొరకు, ఎత్తుకొరకు, పరివార ఆలయములు
అమర్చుటకు గాను నిర్మాణము చేయబడుచున్నది.

శ్లో॥ అధవక్ష్యే విశేషేణ ప్రాకారాణాంచ లక్షణమ్
రక్షార్థం శోభనార్థంచ శాలాయాః సదనస్యచః॥
(కాశ్యపశిల్పం 43వ పటలం, శిల్పరత్నం 40 అధ్యాయం)

ఆలయము, శాలల, రక్షణ, అలంకారాల
నిమిత్తము, ప్రాకారాలను నిర్మించుదురని కశ్యప
మునిచే చెప్పబడింది

శ్లో॥ బల్యర్థం పరివారార్థం శోభార్థం రక్షణార్థకమ్
పంచప్రాకారహర్మాణా మధునావక్ష్యతే క్రమాత్
(మానసారం 31వ అధ్యాయం)

విమానముల రక్షణకు, శోభకొరకు,
పరివారములను నిలుపుటకు ప్రాకారములు
అవసరమని బుదులు చెప్పారు.

బలిని పెట్టుటకును, పరివార దేవతల
నుంచుట కును, అలంకారము కొరకును, రక్షణ
కొరకును ప్రాకారములు నిర్మించబడుచున్నది.

శ్లో॥ వ్యోమాది సప్తశీలాంతం ప్రాకారం కల్పయేత్ద్విజ్ఞః
శైవాది సర్వమూర్తింవా పంచప్రాకార కల్పయేత్
వైష్ణవాలయ సర్వాణాం ఏకాది సప్తశాలయోః
(విశ్వకర్మీయం)

ప్రాకారములు ఒకటి నుండి ఏడువరకు
చేయవచ్చును. శైవక్షేత్రములకు పంచ
ప్రాకారములును, విష్ణుక్షేత్రములకు సప్త ప్రాకారములు
చేయవలయునని విశ్వకర్మీయము నందు
చెప్పబడింది.

ఉదాహరణకు సప్త ప్రాకారములు విష్ణువుకు
శ్రీరంగం రంగనాథస్వామి దేవాలయమునందును,
పంచ ప్రాకారములు శివునికి కాంచీపురం
ఏకాంబరేశ్వర స్వామి ఆలయమునందును,
తిరువణ్ణామలై అణ్ణామలై స్వామి ఆలయము
నందును చూడవచ్చు.

ఏడు ప్రాకారాల పేర్లు :

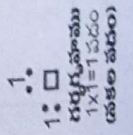
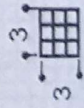
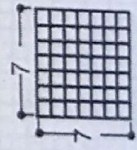
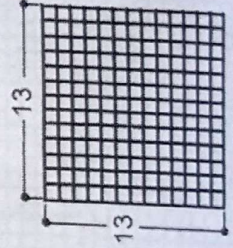
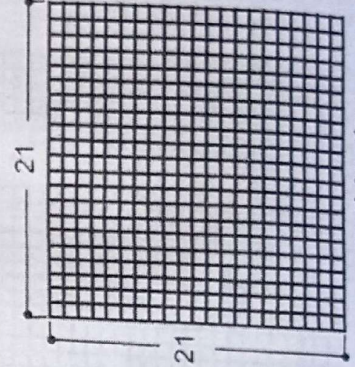
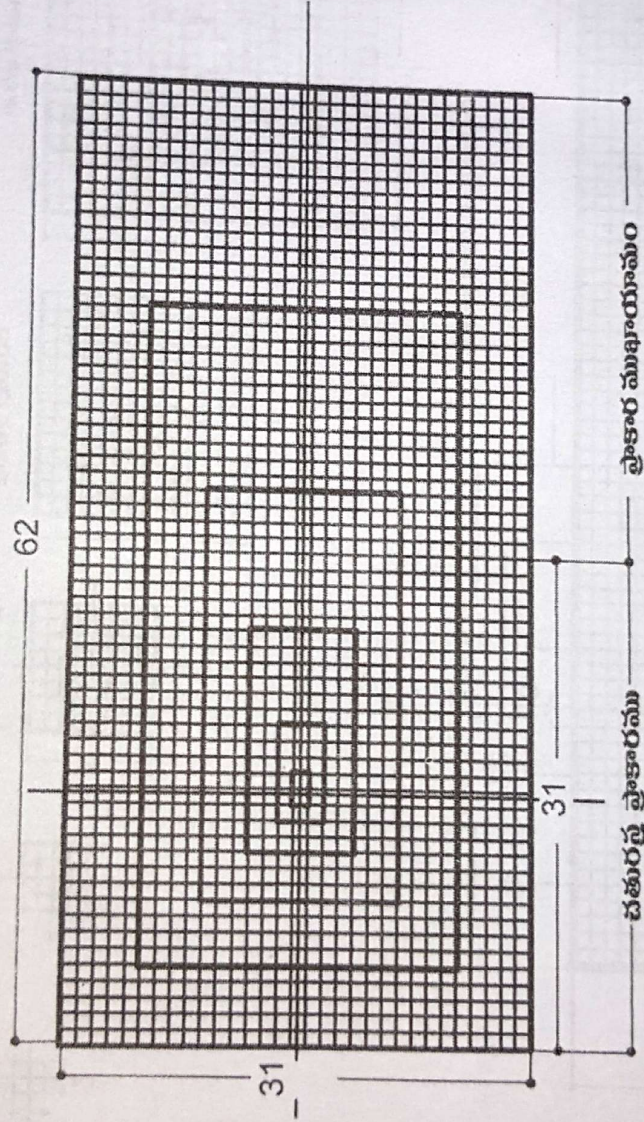
శ్లో॥ అంతర్మండలమేకంతు అంతర్వార ద్వితీయకమ్
మధ్యహార తృతీయంతు బాహ్యహార చతుర్థకమ్
మర్యాది పంచధానైవ మహామర్యాది షడ్భవేత్
ప్రావేశం సప్తప్రాకారం నామభేదంతు కల్పయేత్
(విశ్వకర్మీయం)

1. అంతర్మండలము
2. అంతర్వారము
3. మధ్యహార
4. బాహ్యహారము
5. మర్యాది
6. మహామర్యాది
7. ప్రావేశము అని ప్రాకారములు ఏడు విధములు

శ్లో॥ కృత్వాచతుష్పదం మూలప్రాసాదస్యతు విస్తృతం
ఆధ్యం సాలం మహాపీఠం పదైఃషోడశభిర్యుతం॥
మండూకాఖ్యం ద్వితీయం స్యాన్మధ్యం భద్రమహాసనం॥

జాతిప్రాసాద విస్తారే విన్యసేత్ సకలం పదమ్।
 ఆదిశాలాంతతః కుర్యాదంతర్మండలంమీరితమ్।
 ద్వితీయమంత హరాప మధ్యహరా తృతీయకమ్।
 ప్రాకారం తచ్చతుర్థంచ కథితం తస్మర్వాదికమ్।
 తతః పంచమసాలాప మహమర్వాదామీరితమ్।
 పంచశాలామితి ప్రాక్తం తంత్రవిద్భిః పురాతనైః।
 తత్ప్రేరపద విన్యాసశ్చాదిశాల విశాలకే।
 మహమర్వాదా విస్తారే పద విన్యాసర కాంతకమ్॥

గర్భగృహము $1 \times 1 = 1$ (సకలపదం)
 మొదటిప్రాకారము $3 \times 3 = 9$ (పీఠపదం)
 రెండవప్రాకారం $7 \times 7 = 49$ (స్తంభిలపదం)
 మూడవప్రాకారం $13 \times 13 = 169$ (ఉపచండితపదం)
 నాల్గవప్రాకారం $21 \times 21 = 441$ (సుసంహిత పదం)
 ఐదవప్రాకారం $31 \times 31 = 961$ (ఈశ్వరకాంత పదం)



ఐదవ ప్రాకారం
 $31 \times 31 = 961$ పదం
 ఈశ్వరకాంతపదం

నాల్గవ ప్రాకారం
 $21 \times 21 = 441$ పదం
 సుసంహిత పదం

మూడవ ప్రాకారం
 $13 \times 13 = 169$ పదం
 ఉపచండిత పదం

రెండవ ప్రాకారం
 $7 \times 7 = 49$ పదం
 స్తంభిల పదం

మొదటి ప్రాకారం
 $3 \times 3 = 9$ పదం
 పీఠ పదం

నక్షత్ర స్వయంము

పేజీ 1 ఎ

చంద్రుని రాశి భాగ విధులు ద్వారా నక్షత్ర పాదములు కనుగొను పట్టిక

రాశి	నక్షత్రం	1 వ పాదం అంత్యం	2 వ పాదం అంత్యం	3 వ పాదం అంత్యం	4 వ పాదం అంత్యం
మేషం 0° 0°-30°	అశ్విని భరణి కృత్తిక	3°-20' 16°-40' 30°-00'	6°-40' 20°-00' --	10°-00' 23°-20' --	13°-20' 26°-40' --
వృషభం 1° 30°-60°	కృత్తిక రోహిణి మృగశిర	-- 13°-20' 26°-40'	3°-20' 16°-40' 30°-00'	6°-40' 20°-00' --	10°-00' 23°-20' --
మిథునం 2° 60°-90°	మృగశిర ఆరుద్రా పునర్వసు	-- 10°-00' 23°-20'	-- 13°-20' 26°-40'	3°-20' 16°-40' 30°-00'	6°-40' 20°-00' --
కర్కాటకం 3° 90°-120°	పునర్వసు పుష్యమి ఆశ్లేషా	-- 6°-40' 20°-00'	-- 10°-00' 23°-20'	-- 13°-20' 26°-40'	3°-20' 16°-40' 30°-00'
సింహం 4° 120°-150°	మఖ పుబ్బ ఉత్తర	3°-20' 16°-40' 30°-00'	6°-40' 20°-00' --	10°-00' 23°-20' --	13°-20' 26°-40' --
కన్య 5° 150°-180°	ఉత్తర హస్త చిత్త	-- 13°-20' 26°-40'	3°-20' 16°-40' 30°-00'	6°-40' 20°-00' --	10°-00' 23°-20' --
తుల 6° 180°-210°	చిత్త స్వాతి విశాఖ	-- 10°-20' 23°-20'	-- 13°-20' 26°-40'	3°-20' 16°-40' 30°-00'	6°-40' 20°-00' --
వృద్ధికం 7° 210°-240°	విశాఖ అనూరాధ జ్యేష్ఠ	-- 6°-40' 20°-00'	-- 10°-00' 23°-20'	-- 13°-20' 26°-40'	3°-20' 16°-40' 30°-00'
ధనస్సు 8° 240°-270°	మూల పూర్వాషాఢ ఉత్తరాషాఢ	3°-20' 16°-40' 30°-00'	6°-40' 20°-00' --	10°-00' 23°-20' --	13°-20' 26°-40' --
వకరం 9° 270°-300°	ఉత్తరాషాఢ శ్రవణం ధనిష్ఠ	-- 13°-20' 26°-40'	3°-20' 16°-40' 30°-00'	6°-40' 20°-00' --	10°-00' 23°-20' --
కుంభం 10° 300°-330°	ధనిష్ఠ శతభిషం పూర్వాభాద్ర	-- 10°-00' 23°-20'	-- 13°-20' 26°-40'	3°-20' 16°-40' 30°-00'	6°-40' 20°-00' --
మీనం 11° 330°-360°	పూర్వాభాద్ర ఉత్తరాభాద్ర రేవతి	-- 6°-40' 20°-00'	-- 10°-00' 23°-20'	-- 13°-20' 26°-40'	3°-20' 16°-40' 30°-00'

February													
M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
						1	2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29							

January

॥ హైవేలలో ॥ హా ॥

2004

1st Week

దేవాలయ విక్షణము

శ్రీ. దేవాలయం చూచుకొని భజన కర్తృత్వే
దేవానామ దుష్టి పుష్టి కారో విష్ణు దండంచ సహస్ర కమే ||
కుమారాసహస్ర కదండంచ విష్ణు దండంచ సహస్ర కమే,
తక్కి నాం నామ సార్థినీంచ దుష్టి వినో రలక్ష్య తామే ||

తా. దేవాలయభాగముగల స్థలమునకు సూర్యవిభిడత
మున్ను ఏడలభాగి షములేదు విష్ణు సర్వమిష్ట జ్ఞికిన్ని
క్షుప్తరనితులే పుష్టికిన్ని సహస్రదండముల దూరముగల
(అదౌతముమంచి విక్రతి కి పంక్తి పుషి బాలా దూరము
ఉండుననియర్థము

వంశ కథానిర్ణయ

శ్రీ చరవాస్తు శుభంషాక్తం మవ్ నిత్త వాస్తుకం? అదమంస్తి ర
వాస్తు నేటి దాని భావ ప్రతిష్ఠ తాః॥ చరవాస్తుప్రకారో
రాశుకం సై భంప్రతియతా॥

జ్ఞానమును ప్రకటింపజేయుటకును దేవుని ముందుగాను
బోధించుటకును రమణుని క్రమనిర్దేశముగాను

(శ్రీ పరమ మంస సత్తకార విశేషం) (కంఠ ప్రవాహం)

శ్రీ "శుభాశాస్తి సింహలక్ష్మం శుక్లపక్ష సప్తమీ శుభయోగం శా
వణాశ్చ సకారస్పష్టక సప్తనాం యోగతో వంశం దుష్ట
విష్ట్ర ప్రదస్యచా, గణేశ భవణానాం నదురే తిష్ఠంతి

జా. శనివారమునాటి నక్షత్రము సింహులగు ము కుక్ష పక్ష పక్షమే
 తిది కుభయోగము (శావణ మాసము నందు) ప్రకారం
 కము గలకాలమును గుహరంభముచే SUNDAY 04
 లేని కలకాలము గజరథమేరగపరొతి పళ పథాన్న
 సోపపల కలుగుననిచే పుటదేను

అక్షరాలము

(ముందు ఉద్దేశావళి)

అక్షరములము (మొత్తం ఉచ్చారణము)
 2. శుక్రం పంచ సహస్రణి ఋషు ఉంచకతవిచ.
 అక్షరములము వా వా వాం నుదు; కంక్షాన్తావీహవిచి.

You can not be anything if you want to be everything

05 Monday

శా. కుక్కుడు లగ్నముగాని కేంద్రకామలగాని
 ఉండగా ఆమడువేలు దాపములను పోగొట్టును
 బుధుడు లగ్నముగాని కేంద్రకామలగాని ఉండగా
 ఆమడు వందలదాపములు పోగొట్టును సుకుమ
 లగ్నముగాని కేంద్రమలకామలగాని ఉండగా గృహం
 భముచేసి రవి లక్షదాపములను వారించును

వాస్తవ లగ్నమునకు సకలదాపవారము

శి. వాస్తవ దురుషుని క్రిత వారించువేళను.

శుభముగా శాస్త్రంబు గమనమొంది
 ఆ పరబ్రహ్మంబు నియుల నిద్రను విడి
 జొంగి తొవజ్జనుచేందువేళ స్థంభత్రాటిష్టులు
 సామూహముగ జెయ. గృహములదేవతా గృహములు
 గును. నెరుచిచ్చు దుప్రశాస్త్రంబు వుద్ధియగల్గు
 సదులను పోవించు నాగువంబు
 ఈ మూర్తము సెరమని నెన్నవలయు

06 Tuesday

చెలగి పంచాంగ శుద్ధియు చనితి యొన
 సకలదాపంబు తెల్లను సంహరించు
 విశ్వయోగుగంగ జెప్పిన విశ్వక్రమ్ శా.

(సా. సా. పం) వాస్తవ దురుషుని క్రిత తేచెడి మూసములు

శి. మేషమునందు మేషాన్ని దశమికి శుద్ధియై
 నిత్యైవ శుభముగాను.

పృథుభ మెరువని యొక్కటి యొక్క యొక్క యొక్క

యొక్క యొక్క యొక్క యొక్క యొక్క యొక్క యొక్క

కరుక మందు న శుభై కాదకి దిన ముల్లము శుద్ధియై
 తండు జొంగి తొవజ్జనుచు

శుభ సింహమున పట్టి దిన మేకా పంచతిక
 దురుషుని కాదకి యొక్క యొక్క యొక్క

మృత్యుకాష్టమికిని దురుషుని దురుషుని దురుషుని

మృత్యుకాష్టమికిని దురుషుని దురుషుని దురుషుని

Follow no one but learn from everyone.

కుంభ మెరువేదిం పంకా రతేతే కనిమిది
ఘడియలకును వేచుక రియుగమున

Wednesday 07

శా|| చిత్రనెల: గంతే: శుభ|| వైయాశి: నెల: గంతే: శుభ||
అది || ౧౧ || ౧ || అపరే : || ౧ || ౧౧ ||
అచ్చికి || ౧౧ || ౧ || కార్తీక : || ౧ || ౧౧ ||
తై || ౧౦ || ౧ || మాసి : || ౧౧ || ౧ ||

శాస్త్ర ప్రభువుని సమయములు (శా|| స|| పం||)

శా|| శాస్త్ర ప్రభువుడు నిద్ర వదిలి విజృంభం
నొకొచు ములకును నర్త ఘడియం
పలుచో ములక రామరక ఘడియము
తైల మభ్యంగవే మునకు నర్త ఘడియం
పరక వస్త్రముగతి పరక విభూతియు
దేవతా ర్చనకు పాఠిక పరక యు
భాజనంబునకు తొంబొలము వేయును
మిగతా నాకృతియు నర ములగుచుండు

Thursday 08

శా|| నిర్జి భాజ తొంబొలచట్టు మందు
మంచిరములకు కంకు నమ ద్రిశేని
అయలరా రోగ్ని భాగ్నింబులల రుచుండు
కల్ప శాస్త్ర మతంభిది శ్రీమహాక,

(కయో పరిమాణములు) (శా|| స|| పం||)

శా|| వారి వారంబుల ములకి రువది నాలుగు
ఇల రు రంబులకెల్ల నిరువదొకతి
అక్షరక్షాత్రయంబులకు పదు నెనిమిది యునెన్న
పల యు పద హారును పై పులకును
పల కూడులకు నెల్ల పదు నాలుగు పంచములకు
పది శంకు ను నిలుపవయు
మొత్త ముంబులముల ముపేల్లగా నిజిది
అమర చిశివ లింగ మాకృతి గను

The greatest loss is loss of self confidence.

January

January	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
								1	2	3	4	5	6	7
								8	9	10	11	12	13	14
								15	16	17	18	19	20	21
								22	23	24	25	26	27	28
								29	30	31				

2nd Week

2004

09

Friday

జనమనా రమ్యురిజూతి యనమలగాను
య్య గంభాక్షవలలలో దులబాశ్చరేసి
వాస్తవ్యుడు యని నాధిని వరగలించి
నిల్పవలయును తేలిసవకిల్పవరుడు

(పా॥ స॥ పం॥) (చెడుతెడు వైనమ కేంకి నాజ్ఞ పనచేయవచ్చు
నరులు గురించి)

స॥ ఈ వాస్తవ్యుడు ఎల్లదు నిత్రించు
కారణమును బతికిరియుగమున.
సిద్ధాంతి లక్ష్యముల చేయనెంచిరిగాని
(గ) హం రాశి వల పదుగ) హం ముగ ట్ట.
(గ) హం ముల తే పుడు కుభక్త మము రానేతవు
వచ్చి సతార యునచ్చ భామ.
తారాబలంబున్న కులి రవిత్త భ భామ కుభ
పం చక్రంబుల జూర వలయును.

గృహ నిర్మణాలక్ష్యమునకు
(పా॥ స॥ పం॥) (మృత్యు స్తంభ భామము)

10

Saturday

శ్లో॥ శశి వసుకుజ సప్త రావలారం భక్త య
యవ సుతే పుదయాంకే విక్రమోదవమంత్ర
శ్లో॥ యుక్తమలంబు దాని దశే లగ్న కౌముద
సుత ధన సంహితా యాం మృత్యు వాస్తవ భ
మృత్యు

తా॥ స్తంభ ఘాతం లగ్న మునకు చండుడు ల. టు స
కు జూడు 6. టు ము ధరా వలలు ల. టు మ

11 SUNDAY

శ్లో॥ కౌముద లగ్న 8. టు ము గురువు 3. టు ము
కుంభుడు 9. టు ము రవి 10. టు ము శుక్ర మృత్యు
(మదమ)

(భూమి నిద్ర వస్త్ర లక్ష్మణము) (కామనా)
శ్లో॥ (పద తనా త్తం ననగంక సూర్యవేందు షట్టింక
మితాని భాని)

శ్లో॥ మహానైవ గృహ విధేయం తాదాగ వావి
Life is like a bicycle, you keep moving or you fall down భిననం నశపమతి

February														
M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	
							1	2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	
23	24	25	26	27	28	29								

January

2004 3rd Week

శా. రవి దిండు నక్షత్రమునకు
 అయిదు పదు పది రెండు అమిదిక
 ఒకటి అరు నక్షత్రములు భూమికి నిద్ర కలుగుచున్న
 ననితి సుమీకనుక ఈ నక్షత్రములందు గి) వంతటాక
 వానికుంపంకులు నిర్మిపరావ నివేళి యవలయును

Monday 12

గీ. కత్తరిచాప మూర్తి సర్వకాతి ముచ్చుంభభాషంబు
 రావలకలంబుచైన
 వాస్తవ్యులు రుషాద తానిద్రవవెనె నిచేయవచ్చును
 గుహకర్త త్రేష్టముగను

శ్లో. ఆమాయాంభాసు వారేచ గ్రహణౌ రావలకలంబుః
 మూర్తింతు మూసదాపంచనదాపంచ వాస్తవ్యులు రుషాద

శ్లో. నపభాగం గుహక్షేత్రం కూర్చున్న భక్తిదానం
 పాదభ్యయమదానభాగే నేపం నాభిప్రకీర్తనం

శ్లో. త్రుభమంచ తురాకారం ముచ్చు మంత్రం స్వకౌతం
 కిరంపర్తు లాకారంకితా. కంకురూదయోః

శ్లో. సంగామ ప్రవహంశ హము నగ రగ్రామే
 మంత్రం ద్భవే

Tuesday 13

జొచ్చే సత్తా విజెన్త భేచ సతతం నామ క్షేజంసాన్వేషణం
 అజెన్త తంజెన నాదు యస్యి ఫలదంసాన్వేషణ మభంతసేషు
 త్రించ ద్విత్వే రణ్య పరంపల రమితో కలూః

శ్లో. ఆహం ప్రవహంశ భువో లయములగా ముంత
 సుజాత యకరణములకు

జెన్త నక్షత్ర మల్లింప జెదు వసుధ
 నామ తార (వశ స్తంబు నరులకేల్ల)

శా. గామ నిర్మాణమునకు గి) వారంభమునకు వక్రక
 తాళి వార సంగా మూడులకు మున్న గువ రవిణాము
 లకు నామ నక్షత్రము ప్రధామని కాలామి తాళి
 క) త్తజాస్త్ర కాలి రిగంభ సమ్మత మైయున్నది
 గాని జెన్త నక్షత్రము తగదు

Do important jobs now before they become urgent

January

3rd Week 2004

January													
M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
							1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28	29	30	31				

14 (పక్షిక్షచంద్రిక) తారా బల వివరణ.
Wednesday

శ్లో॥ ప్రదమ ప్రధంతా జ్యోతి యే తు త్త్య తియకం
తు తియే పంచంతా జ్యోతి కనంత్ర యే వత్తయే తం॥
ప్రదమ నమక
ప్రదమ నమకము లో జన్మ తారా
ది తియ నమకము లో విజ తారా
తు తియ నమకము తా (ప్రత్యోక్తం) (వేదల వయసు)

- 1) జన్మ తారాది పక్షి = రవి 3వ పాదము లో = 7:45 = కేకము
- 2) విష తారాది పక్షి = రాహు 1వ పాదము లో = 3:45 = గురము
- 3) ప్రత్యోక్త తారాది పక్షి = కేతు 4వ పాదము లో = 4:45 = లహరము
- 4) నైడున తారాది పక్షి = శని = 2వ పాదము లో = 5:45 = ముప్పు
- 5) సంప తారాది పక్షి = బుధుడు 4 వైపు తారాది పక్షి గురము
- 6) సోమన తారాది పక్షి = చంద్రుడు 8 వైపు తారాది పక్షి కేకము
- 7) పరమ విక్ర తారాది పక్షి కుబుడు॥

15 (విశ్వక్షచంద్రిక) (గు) హారభగ్రహస్థితి బలాబలములు॥

శ్లో॥ దోషాచారం నియుతం ని హంతి బలహన లగ్నస్థిత
శ్చేందు జంతుక్రస్ర విగుణం గురుత్వ క గుణం లలగ్నం
పంచేష్టి కమే॥
లగ్న స్థి సచయే స్థితే గృహ పతి క్రూర బలీ చేతవే॥
లగ్నై కాదశ గా రవిత్వ సకలా దోషాన్ని హంత్యో వతాన్॥

తా॥ పక్షిక్షలములతో కూడిన బుధుడు లగ్నమందుంటే
లక్షి దోషములను ముహూర్త లగ్న మునందుకుక్తు
దుంన్న రెండు లక్షి దోషములను పంచేష్టి కబల
పంప న్నై బుహస్థితి లగ్నమును పది లక్షల
దోషములను పోగా ప్రియమి రవి కుబేరముల
తు తియ పక్షి మేకాదశములందున్న రెండు
లక్షల దోషములను పో గుప్తు లలో సర్వ సన్నము

Every failure teaches a man a lesson if he wants to learn.

January

శ్రీ॥ నీచక్షుఃత్రుగళా దోషే శుక్లే చంద్రోదయో రహా॥
నిర్మలతాంసదనం శశితతినిస్సత్వ మూర్ఖులకూతాత్

తా॥ శుక్ర. చంద్ర రవిగురులు. నీ చాస్త్ర బలహీనశాసుల
మండల గృహ నిర్మలతామూలం చేన నా గృహము
సర్వకాలములందును జాతి(త్రిమమభ వింతునని
పరిష్కారం వచిలుంచెను.

విశ్వజ్ఞుఃపాస్త్ర(కారక)

శ్రీ॥ యదా రవి నిర్భతే నీచశాశిగళేవా. గృహంశస్థి
నాశంసేవేత్. చంద్ర నిర్భతేచిస్తగళే నీచేవాతదా
గృహంశ

ప్రవాశశి గురూనిర్భలస్థే నీచేవా గృహంశస్థి సుఖనాశం
శుక్రస్తే నీచగళే నిర్భతేవావీత్రనాశం

తా॥ గృహంశకాలమందు. రవినీచస్థుడైనను బలహీ
నముగానున్నను నా గృహం పతికి మరణమును
చంద్రుండొకస్రంగముడైనను నీచుడైనను బల
హీనముగానున్నను గృహం పతికి భావుక్తు
మరణమును గురుడు బలహీనముగా
గానిచిస్త్రంగ తుడైగాని నీచస్థితినిబొందినవాడై
గాని నున్న గృహం పతికి ఆశాభీమును శుక్రుడై
స్రంగ తుడైనను నీచయందున్నను బలహీనము
గానున్నను ద్రవ్య నాశనము కలుగునని. శామ
డై పశ్చిమి వచన మై యున్నది(మంత్రయు)

శ్రీ॥ ఆస్తదాశోభితన(గ్రాహ్యోఃప్రతిదైవసి తో బుధైః॥
నాస్తదాశో సదాచంద్రో నమ్రోఽబ్జుSUNDAY 18
స్థో నీచతో॥

తా॥ బుధ చంద్రులకు. ఆస్తగతదా పముతోదు సూర్య
చంద్రులు నీచస్థి తిలోనుండగా గృహంశము
కూడదు

The winner is a part of the answer.

January

4th Week

2004

శం॥ సు॥ పం॥

January													
M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
							1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28	29	30	31				

19

Monday

శ్లో॥ మి న మేష చ తు పాద దోష భ కుంఠ చ తు (ఆ భం॥

క న్ని పంచ తు లా పం॥ పంచా ర్థ క ను క ర్మ దోష శ్చై వ మ క ర్మ నిం వం॥
మి థు న పంచ పాద యోగి॥

తా॥ మి న మేషం ఘ॥ ౪-౧౨ విఘ్న ప్రి ష భ ల
కుంభం ఘ॥ ౪-౪౫ విఘ్న క న్ని యే లా
ఘ॥ ౫-౦౦ విఘ్న క ను న్ను క ర్మ లం ఘ॥ ౫-౩౦
విఘ్న ప్రి క్తి కిం॥ మి క ర్మ నిం వం మి థు నం
ఘ॥ ౫-౧౨ విఘ్న॥

(గ) హవరకామంతుం దవలసినవృత్తిమం॥

శం॥ సు॥ పం॥

శ్లో॥

20

Tuesday

మల్లె మొల్ల యు పో కి మ రు వము గనేడు
హంసాని ఖి రుజ్జ ర దాచి ని మ్మ
పం రి జా త ము పత్రి నా రి క్త మే వే తు
అ న్ని గు తు లని యు పో గ ద పో న్ని
తం సంగ మత్రి సీతా యు పో పె గ జం మే
మం దార సుర త కు వం చి పత్రి పచ్చి రు
క స్తూరి పట్టె ల బి ద పత్రి రా మం పల వు
మ నా రి రం జి న యు ని
గ్లో॥ గు హా ము నలు గు పట్టు ని శ్చ చె ట్టు కూ దె నే ని
ఇం ద్ర భా గం బు గల్లు నా లుం టే యం దు
త్రీ మ హం ద్రీ ని రం బు త్రీ మ మ్మ సంగు
శ్చై వ కృష్ణ మ తం భి చి త్రీ మ హం ద్రీ

The winner always has a plan.

పుత్ర హిమదుగాగ పుత్ర శీతము Wednesday 21

చిత్తు శిశియుగాగ దీనపంతుడుగాగ, ఆలతనీతి
సన్నిహిగాగ, అంగ హిమదుగాగ ఉత్తవంతు

గాగ శిశిమలక
గీ॥ పుత్ర హిమదుగాగ. పుత్ర శీతము తోక ఇంటిలోన
జేయుదంతుగాగ. చిత్తు శిశియుగాగ దీనపంతు
దుగాగ ఆలతనీతి సన్నిహిగాగ. అంగ హిమదు
గాగ ఉత్తవంతు దుగాగ మిసముల మేలవని
బాసిగాగ. పోట్టి హారలుగాగ దిట్ట హామిక్తుకొందు
నాయుధంబును బునియదికొని.

తిరుమల
(తిరుమల పాపములు = ఘడియలు)

1) చవితి. తిదిప్రారంభమైన పిదప చాచి Thursday 22
గం 10 ఘడియలు తోక 10 గంటలకాలము
ఉభయము చేదుపరి. శుభకరములకు శుభము

2) పుష్టిప్రారంభమైన పిదప చాచి గం 10 ఘడియలు
తోక 2. గం 10 కాలము ఉభయము చేదుపరి
శుభకరము

3) ఉష్ణమితిదిప్రారంభమైన పిదప గం 10 ఘడియలు
తోక 5. గం 36 నిమిషములకాలము ఉభయము
చేదుపరి శుభకరములు

4) నవమితిదిప్రారంభము పిదప చాచి గం 10 ఘడియలు
తోక 4 గంటల 24 నిమిషములకాలము ఉభయము
చేదుపరి శుభకరములు

5) దానిదశితిదిప్రారంభమైన పిదప చాచి గం 10 ఘడియలు
తోక 5-36 నిమిషములకాలము ఉభయము
భక్తిరము చేదుపరి శుభకరములు

The winner says "Let me do it for you".

- 1) శుక్తి = అనుభవించేది
- 2) మూర్తి = ఇల్లు
- 3) మేధం = వేలించి
- 4) సమృద్ధి = ఎక్కువ
- 5) సంపత్తు = రకరకాల సమృద్ధి
- 6) భవం = భవము
- 7) మేలు = ఎక్కువ చేయటం
- 8) నాశం = వినాశం
- 9) కలహం = పోరుట
- 10) స్వేచ్ఛం = నియమం/కట్టుబాటు

యోని పనిమదిరకాలుగా ఉంట్టుంది అవి విక్రల
నశుసరించి ఉంటాయి వీటి నిగ్రహం భంకనీ దిస్తా
వీ తలని గ్రహం ప్రాణాలనే కౌస్త్రకం కులు అంటారు

- 1) వ్యతిరేకం - పరాకాండం / సోపానం యోగం విక్రమ విద్యుత్తు
- 2) భూమి - పరిగ - అక్షయం - అక్షయ శక్తి శక్తి శక్తి శక్తి శక్తి
- 3) సంహారం - సంహారం - సంహారం - దక్షిణాది క్రింద - అక్షయ శక్తి
- 4) శాశ్వతం - క్రింద స్థాయిలో నిలువండి - అక్షయ శక్తి శక్తి శక్తి
- 5) పృథ్వీ - పృథ్వీ - పృథ్వీ - పృథ్వీ - పృథ్వీ - పృథ్వీ - పృథ్వీ
- 6) భూమి - గాఢ - వాయు - వాయు - వాయు - వాయు - వాయు
- 7) గాఢ - పృథ్వీ - పృథ్వీ - పృథ్వీ - పృథ్వీ - పృథ్వీ - పృథ్వీ
- 8) క్రింద - క్రింద - క్రింద - క్రింద - క్రింద - క్రింద - క్రింద

ಅಂಕಂ-ತಂ ಬೇಗುಲಂ ಸಿ ಭಾವಂತ ಸವಿಲುಯಾನಿ ಕೊಯ್ತು

- 1) తస్మిన్ = చాకింగ
 - 2) భుక్తి = అనుభవించేది
 - 3) శక్తి = శక్తి గలవాడు
 - 4) కన్యావాన్ = కత్తి మంతుడు
 - 5) భూపః = రాజు
 - 6) భూం = నటంసిక్తుడు
 - 7) విజృంభతః = భయంపోసివాడు
 - 8) వైషాంసర్యం = వలదుడు
 - 9) అప్రసక్తః = దూరము
- The winner sees a green near every sandtrap. The loser sees a sandtrap near every green.

The winner sees a green dead body sandtrap. The loser sees a sandtrap near every green.

ఆంధ్ర యాదీగ శాస్త్రము

ఆంధ్ర యాదీగ శాస్త్రము గురించి గ్రంథములు వ్రాయుట
గలది అని 1) ఆయుం 2) వ్యయం 3) యాని 4) దినం
5) వారం 6) అంశం అనెడి

- 1) ఆయుం అంటే రా బడి. లా భము. తేక. మెగులు
- 2 వ్యయం అంటే. శిర్వు తేక తేరుగు
- 3 యాని. అంటే దిన
- 4 దినం అంటే నక్షత్రము
- 5 వారం అంటే వారము
- 6 అంశం అంటే భాగము తేదాగుణము

విజినానై నచెప్పిన వాని తో పోలిండు పరచి గుణించి
ఆయుం పన్నెండొ రకంలుగా ఉంటుంది వాని
వివరములు

- 1 యాగం = అనుకూలం దా వచ్చుది
- 2 భాగం = అనుభవించేది
- 3 కర్తవ్యం = కూడ వచ్చుది
- 4 వారం = కార్యం
- 5 దానం = తిండికి ఉపయోగపడేది
- 6 భవం = దేవుని
- 7 సుఖం = సుఖము
- 8 భర్తం = భర్తము
- 9 జ్ఞానం = తేలియజేప్పేది
- 10 యాగం = కరి నేది
- 11 సైది = కూడేది వచ్చుది
- 12 అర్థం = దేవుని

Tuesday 01

The winner sees an answer in every problem, The loser sees a problem in every answer.

28 Friday

అంకు ఖాతావేక్షలు

8. $\frac{1}{x^2} = x^{-2}$ $\frac{d}{dx} x^{-2} = -2x^{-3} = -\frac{2}{x^3}$

8: రేఖ రేఖాంశాలు = రేఖ వంశాగ్రహాలు
8: వంశాగ్రహాలు = రేఖ రేఖ

8) $\frac{1}{x^2} = x^{-2}$

8: అయి = 605 యొక్క
9: యొక్క = 205 యవ

8: ఈ పని = 105 రోజులు

1) ఇది ఒక గోడకు గోడల నడి $1\frac{3}{8}$ సమమగు
విత్తి 12 దూరములు $= 12 \times 1\frac{3}{8} = 1.4\frac{1}{2}$
కా $= 2$ విత్తి $2 \times 1.4\frac{1}{2} = 2.9$

తంజావూరు మూల. 24 దేశం నుండి మలలు = 25x
25x 1.38 = 29"

29 Saturday

చివరి 25 x 1.38 = 29"

మధ్యమమున $24 = x \cdot 1\frac{3}{4} = 2 \cdot 10\frac{3}{8}$

$1. \frac{3}{8} = 2' - 7 \frac{31}{32}$ వాంగులు = $23 \frac{1}{4}$
 దూరము (అంగుల) కంటే $2' - 8''$

చరచము (అందు) కాలం 32 మూరలు = $32 \times 2\frac{3}{4} = 88 - 0''$ మూల సూరము,

అనంతరం గానం చేశారు

30 SUNDAY

~~ନିର୍ଦ୍ଦେଶନା~~

~~2 3 4 5 6 7 8 9 10~~

[illegible]

The winner says "Let me do it for you".

The winner says "Let me do it for you".

శిల్ప శాస్త్రంలో ఉపయోగించే కాలతలు

Wednesday 26

ఈ శిల్ప విద్యలో ఉంట్టే కాలతలు
సాక్షాత్తు చేర్చి తనద్రాక్షకాలతలనోబ్బకా
పలసి ఉంటుంది. (ఉదాహరణ) శిల్ప విద్యలో చేతితో
సేయదగిన వాటి కాలతలను. పరమాణువులు
మొదలైనవి. ఉ. ఉదాహరణ. చెప్పలంటే మనకుంటే
కొకసం దనిదానిని. దానిని పరమాణువునో పడు

అందువల్లనే ఇది పరమాణువు. ఈ పరమా
ణువు మేము మునుల కంటికి జ్ఞానుల కంటికి
మాత్రమే కనిపిస్తుంది. ఈ ఉదాహరణను ఒక కాలతగా
మొదటి దానిని శిల్ప శాస్త్రం చెబుతుంది. అంటే కొ
ద్ద కొంతకంటే దాని రంగు రంగుల దాని రంగు రంగుల
సూర్య కిరణాలలో మనకు కనిపించే ఖాళీ 2 ఎంత
ఉంటుందో. ఈ ఉదాహరణను ఉండలం దాని చెప్పారు

ఉదాహరణలు దివ చిన్న పంట కాలతలు

ఇలా చెప్పబడిన పరమాణువులు ఏనాడో చెప్పబడిన రథరేఖలు

Thursday 27

- 8. పరమాణువు | ఒక రథరేఖలు
- 8 రథరేఖలు | ఒక వంక (గమ) (వెంటక వివరగాను)
- 8 వంకలు | తిరిగి (యూపి)
- 8 తిరిగిలు | యుంక
- 8 యుంకలు | యువ (వెడ్డ గింజి)
- 8 యువలు | అంగుళంగాను. తొక్కింప బడింది

దేశంలో దానికే వడ్డన్ని శిల్ప శాస్త్ర కాలతలకు పనికి
రావు. అందులో. ఏమున్నది. అసలు. తలకు వడ్డ
మాత్రమే శిల్పంలో చేస్తుంటే ఒక్క అంగుళంకొలత
కుంటే పనికి వచ్చేది 4 ఈ కాలతలకును యువ అంగు
ళంకు 6 శిల్ప శాస్త్రంలో కాలతలకు తీసుకోబడ ప్రమా
ణాలు. ఇవిగాక ఉదాహరణలు అంగుళం దాక ఉన్న కాలతలు
కొంతకంటే చేయడానికి కొంతకంటే పని పరచడమేనని

You can not be anything if you want to be everything.

05 Monday

25 Monday జా. కుక్కుడు లన్న ముగాని కేంద్ర కృతామల గాని
 డండగా ఆమడు వేలు దా ప మలలను వే గా య్లును
 బు కు కుడు లన్న ముగాని కేంద్ర కృతామల గాని డండగా
 ఆమడు వందల దా ప మలలను వే గా య్లును నుకును
 లన్న ముగాని కేంద్ర మల కృతామల గాని డండగా నృహతం
 భము చేసికని లక్ష దా ప మలలను వందల చును

చాస్త్ర లక్షణమునకు సరల బోధన వంశము

శి. వాస్తవ్యుడు గురువును విడవాలనుకునే కని.

ధీ సముగా శాస్త్రంబు గమనమెరింగి
 ఈ పరమవర్ణంబు నిలుల నిద్రను విడి
 జొంగి తావజ్జనుచేందువేళ స్థంభప్రతిష్ఠలు
 సామాన్యముగ జెయు. గృహములదేవతా గృహములు
 గును. నెరుచిచ్చు ఈత్ర శాస్త్రంబు వర్ణియగల్గు
 నరులను పోషించు నాగుహంబు
 ఈ మూర్తము సెరమని నెన్నవలయు

06 Tuesday

06 Tuesday చెలగి పంచంగ శుద్ధి యుచు నీతి యొన
సకల బాపంబులెల్లను సంహరించు
విశ్వ యోగుగంగ చెప్పి ను విశ్వ కృత్తి శంభు

(పా. సి.పి.) వాస్తవ ప్రపంచ నిర్మాతగా మహాసముద్రము

శ్రీ ॥ మేలమంసము నంకుమే చామి దకి మికి ఘడియలై
చింతలై న ఘనముగాను ।

పరిశ్రమ మిరువది యొక్క అంకెలకు పైగా

కరుణ మందు న శుభ్రకావశిచిన మందు గుడియల

అందుజాగ్రత్తనుజేంచు
 ఘనసింహమున సృష్టిచిన మేకా లింక లింక

మృత్యుకాష్టమికిని దేవులది పది ఘంటిక

మధిర దాని దశ నష్టమమనతఁచు

Follow no one but learn from everyone.

కుంభ మిరువేదిం పుతా రతతా క్రిమిది
మదియలకును వేమక రియుగమున

Wednesday 07

శా॥ చిత్రనైల: గంతే: ౨॥ శు॥ జ్వేయశ్చి: సల: గ్రాత: ౧॥ శు॥
శిది " ౧౧ " ౧ " ఉపశా: " ౧ ౧౦౧ " ౧
శిభిశి " ౧౧ " ౧ " కార్తీక: " ౧ ౧౦౧ " ౧
తై " ౧౦ " ౧ " మాశి: " ౧౦ " ౧ " ౧

శాస్త్ర కురుషాని సమయములు (శా॥ స॥ పం॥)
శా॥ శాస్త్ర కురుషాదు నిద్ర వదలి విజివ్వులు
నొక శౌచములకును నర్తకుడియు
పలుదోములకు రావరక ఘడియము
జైలమ భంగవ మునకు నర్తకుడియు
పరక వస్త్రముగతి పరక విభూతియు
దేవతా ర్చనకు పాఠిక పరకయు
భోజనంబునకు తాంబూలము వేయును
మిగతా నాకృతియు నరమలగుచుండు

Thursday 08

శా॥ నిర్మి భోజన తాంబూల చట్ట ముందు
మందిరములకు శంకు నమర్చి శాని
ఈయలరా రోగ్య భోగ్యంబుల లరుచుండు
శేల శాస్త్ర మతంబిది శ్రీమహాశాన,

(వేయి పరిమాణములు) (శా॥ స॥ పం॥)
శా॥ హరిహరంబులు ములకి దువదినొలుగు
విలదు రంబులకెల్ల నిరుపజాకతి
శ్రీహర్షశ్రీయలకు పదునెనిమిదియునెన్న
పలయు పరహారును వైశ్యులకును
పలు శూద్రులకునెల్ల పదు నాలుగు పంచములకు
పది శంకు ను నిలుపవయు
మొత్త ముండు భముల ముప్పాల్గూ నిజివి
ఈమరచి శివ లింగ మార్కె చెగను

The greatest loss is loss of self confidence.

January

2nd Week

2004

09

Friday

జనమనా రనురు విజృంభింప నమోగాను
 ఉన్న గంభాక్షతలతోడ ధూళిచేచేసి
 వాస్తవమును నిరూపింపగలరని
 నిల్పి పలయును తొలిసారికిల్పి పరుడు

January																					
M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S								
							1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11				
12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25								
26	27	28	29	30	31																

(శాం. సు. పం.) (చెడు తెలుగుననుకంకి సజ్జ పన చేయవచ్చు)
 నరులు గురించి)

సా. ఈ వాస్తవమును పలుకుదు నితరులను
 కారణమును బట్టి కలియుగమున.
 సేద్యం తెలుసుకుంటే చేయవలసిగాని
 గ్రహం రాశి వల పదుగురు ముగ్ధులు
 గ్రహములతో పాటు కుశక్తి ముగ్ధులను
 వచ్చి సత్యం తెలుసునప్పుడు
 తారాబలంబున్న కుశక్తి రవి క్షుభధామము
 పంచకంబుల జూరవలయును.

(శాం. సు. పం.) గ్రహ నిర్మలాలక్ష్యమునకు
 (మృత్యు స్తంభ ధామము)

10

Saturday

సా. శక్తి వసుకు జన్మ రావలం దుకృష్ట
 లు ననుతే మదయంతే. విక్రయించవలెను
 శక్తియుతుకములతో. దాని తనలో గుర్తు
 సుతే ధన సంపాదనంబు. మృత్యువు స్తంభ
 గుర్తు)

సా. స్తంభ గుర్తులను ముగ్ధులకు చండుదు
 కు జూడు. గుర్తును బుధ రావలం దు
 11 SUNDAY శని కౌతుకులు గుర్తును గుర్తు
 కుంత్రిడు. గుర్తును రవి గుర్తును
 (మదమ)

(భూమి విక్రయస్థలికామము) (కామము)

సా. (మద తనంతో) పనగంక సూర్యవేందు పుట్టించ
 మితాని భాని.
 శక్తి మహానైవ గృహ విధేయం తాదాగ వాసి

Life is like a bicycle, you keep moving or you fall down. జననం నశనం

తా|| రవిదేందు నక్షత్రమునకు
 తిరుగు పదు 1 పది 10 రెండు చా మిరిక
 ఒకటి 1 రు 2 నక్షత్రములు భూమికి నిద్ర కు సుదీర్ఘ
 నది గునుక మకకకి నక్షత్రములు దు గు వంతు హంక
 వాసి కూపండులు నిర్మి పరాధ ని వేలి యవల యును

12

శ్రీ|| కత్తరి వాష మాద్య సర్వకా తి ము తున్ద్రంభ భాషంబు
 వాస్తవ్యుడు నిలన్ద్ర త్తైత్తి (శా|| సు|| పం||)
 రా ము కాలంబు వైన .

శ్రీ|| ఈ మాంయాంభా సు వారే చ గ్రహా శా రా ము కాలంబు
 ముంద్రం తు మా సదో పంచ నదో పం వాస్తవ్యుడు పురుషం
 (వాస్తవ్యుడు ని నంభి సాధన నిర్మయం)

శ్రీ|| నవ భాగం గు హాక్షత్రం కు రాని శ్చ క్షి (తి దా శు, సం .
 పంద బ్బియ ము దా గా గే నే పం నా భి ప్ర కి ర్త తా ||
 శ్రీ|| ప్రథమం చ తు రాకారం ము ద్వి మంతు ప్త కౌతాకం .
 కిరం వర్తు లాకారం కి త్తా . కంకు ము ద యోం .

శ్రీ|| సంగా ము ప్య వ వంశ ధా ము నగ ర గ్రా ము షా
 (నక్షత్ర ప్రాధాన్య ము) (రామ ము త్తై)

13

జోయే సత్తా వి జన్మ భే చ సతతం నా మ క్ష జంసానీ త్తల
 తి జిన్మ తం జన నో దు య నిర్మ లదం న్దో న్దా మభం తనీ త
 (తింశే ద్వి త్త) ర షా పరం పల ర మి త్తా కులం ||
 త|| ఈ నా వప్య వ వంశ భు త్తే లయ ము లగా మ మంత
 న్దా త్తే య క రా ము లకు .

జెప్త నక్షత్ర ముల్లింప జెదు వ సుధ
 నా మ తార . ప్ర క స్తం బు నరు లకేల్ల .
 తా|| గా మ ని ర్మ దా ము నకు గు వంశం భ ము నకు వక్ర క
 తా|| పార సంగం ము దు లకు మున్న సు న పీణ ము
 కు నా మ న క్షత్ర ము ప్ర ధా ము ని కాలం ము త త్తే
 క్షి త్తా ము క్షత్ర ము (గంభ స మ్మ త్తే యు న్దా వి
 గాని జెన్మ న క్షత్ర ము త గ దు

2. గ్రామ నక్షత్రము దీన్నే వాస్తు నక్షత్రమని అంటారు

3. స్వామి నక్షత్రము ఏదేవుని విగ్రహానికి ఆలయము నిర్మిస్తామో ఆదేవుని జన్మనక్షత్రం

పై మూడింటిలో మొదటిదైన కర్తయొక్క జన్మ నక్షత్రము అన్నప్పుడు యజమాని నామనక్షత్రాన్నే తీసుకోవాలి. ఒక్కొక్క గ్రామం, నగరం, పట్టణము ఏదో ఒక చెప్ప బడ్డసమయాన, చెప్పబడ్డ నక్షత్రంలో ఉంటే దాన్నే గ్రహించాలి. లేకుంటే గ్రామము పేరులో మొదటి అక్షరాన్ని తీసుకోవాలి.

ఏయే మూర్తికి ఏయే నక్షత్రమో మనకు ఋషులు అందించిన విషయాలు శిల్పాగమ గ్రంథాలలో చూడవచ్చు. అలా కొన్నింటికి లేని యెడల ఆదేవుని పేరులో మొదటి అక్షరంబట్టి నామ నక్షత్రం తెలుసుకొని దానితోనే గణితం చేయాలి.

శివలింగ నక్షత్రాలు :

స్వయంభూలింగానికి	ఆరుద్రానక్షత్రం
దైవీకలింగానికి	పుష్యమీనక్షత్రం
ఆర్ష లింగానికి	స్వాతి నక్షత్రం
అసురలింగానికి	ఉత్తరానక్షత్రం
మానుష లింగానికి	అనూరాధనక్షత్రము

దేవతల జన్మనక్షత్రాలు :

గణపతి	: శతభిషం
సుబ్రహ్మణ్య / షణ్ముఖ	: కృత్తిక
స్కంద - మురుగ	: విశాఖ
శివుడు	: ఆరుద్ర
బ్రహ్మ	: రోహిణి
కృష్ణుడు	: రోహిణి
విష్ణువు	: శ్రవణం

రాముడు	: పునర్వసు
శని	: భరణి
భగవతి / పార్వతి	: పూర్వాషాఢ
కాళి	: కృత్తిక
దుర్గ / సరస్వతి	: స్వాతి
లక్ష్మీ	: ఉత్తర
భూదేవి	: విశాఖ
చండేశ్వరుడు	: స్వాతి
క్షేత్రపాలకుడు	: మృగశిర
చంద్రుడు	: రోహిణి
ఆదిత్యుడు	: మఖ
వీరభద్రుడు	: భరణి
శాస్తా	: ఉత్తర
గరుడ / హనుమంతుడు	: స్వాతి
వామన	: శ్రవణం
మత్స్యావతారం	: రేవతి
కూర్మావతారం	: కృత్తిక
వరాహావతారం	: మూల
నరసింహావతారం	: స్వాతి
పరశురామావతారం	: మృగశిర
శ్రీధర	: మూల
జ్ఞాని	: హస్త
బలరామ	: ఆరుద్ర
కల్కి	: ఉత్తర

కర్త నక్షత్రము, వాస్తునక్షత్రం, స్వామినక్షత్రం, అనే ఈ మూడు కలిపి, ఈ మూడింటిలో ఆలయానికి తగిన ప్రమాణానికి తగిన పొంతనతో యుండే కొలతను గ్రహించాలి.

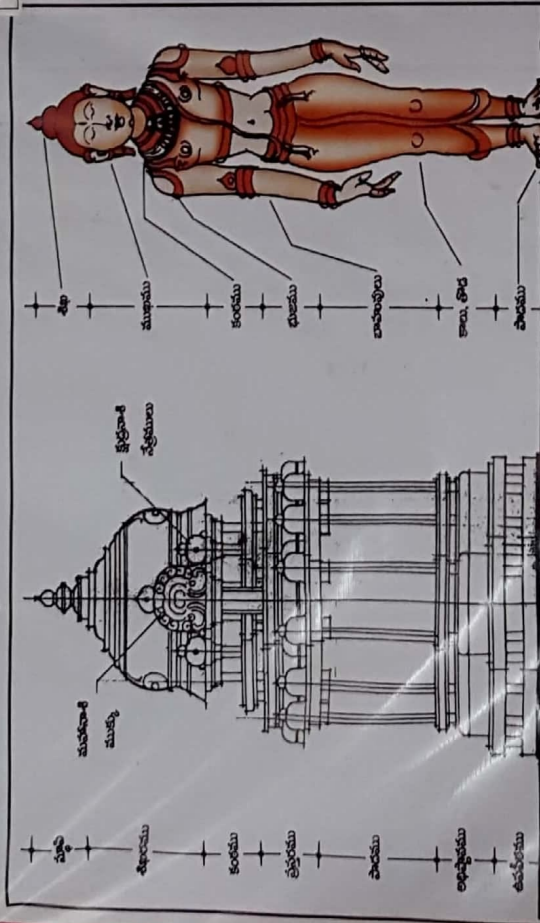
జ్వరం ఆయాధి హింసములు

24

విష్ణుమూర్తి శయనరూపములో ఆలయము

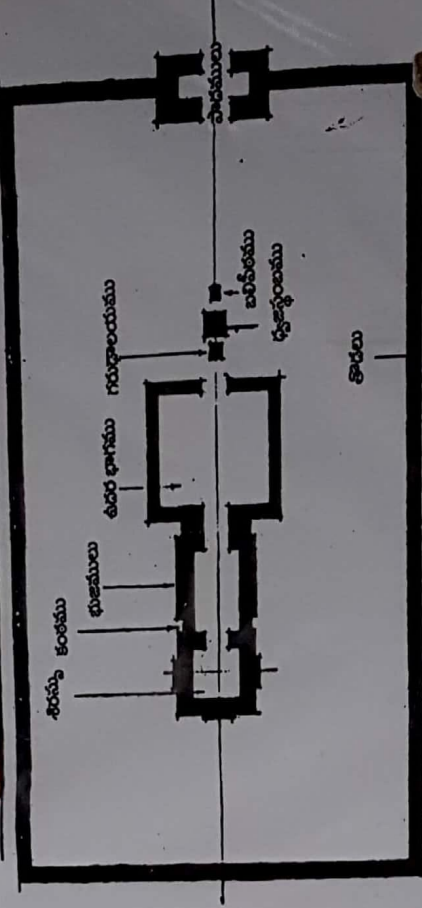
రూపము పోయినట్లు

విష్ణుమూర్తి స్థానక రూపములో ఆలయము



ఉపరము చరణాలారము అభయము బాహువులము శిఖ చరణము శయనము
 పాదపురము కరాళము ప్రసాదము బాహువులము శిఖరము ముఖము శయనము
 ఉపరము శిఖరము కంఠము పుష్పరము పాదము అభయము ఉపరము

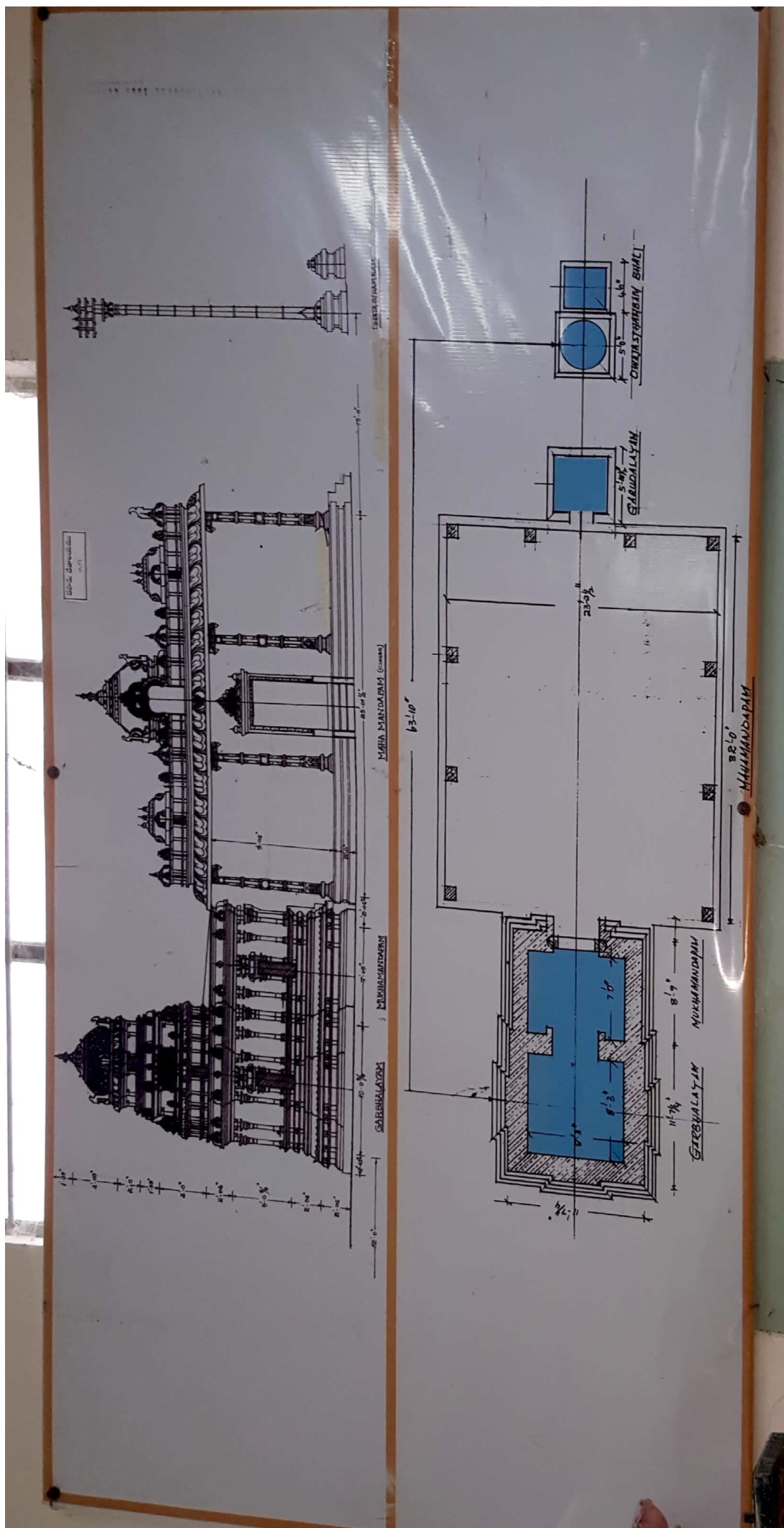
(విష్ణుమూర్తి శయనము)

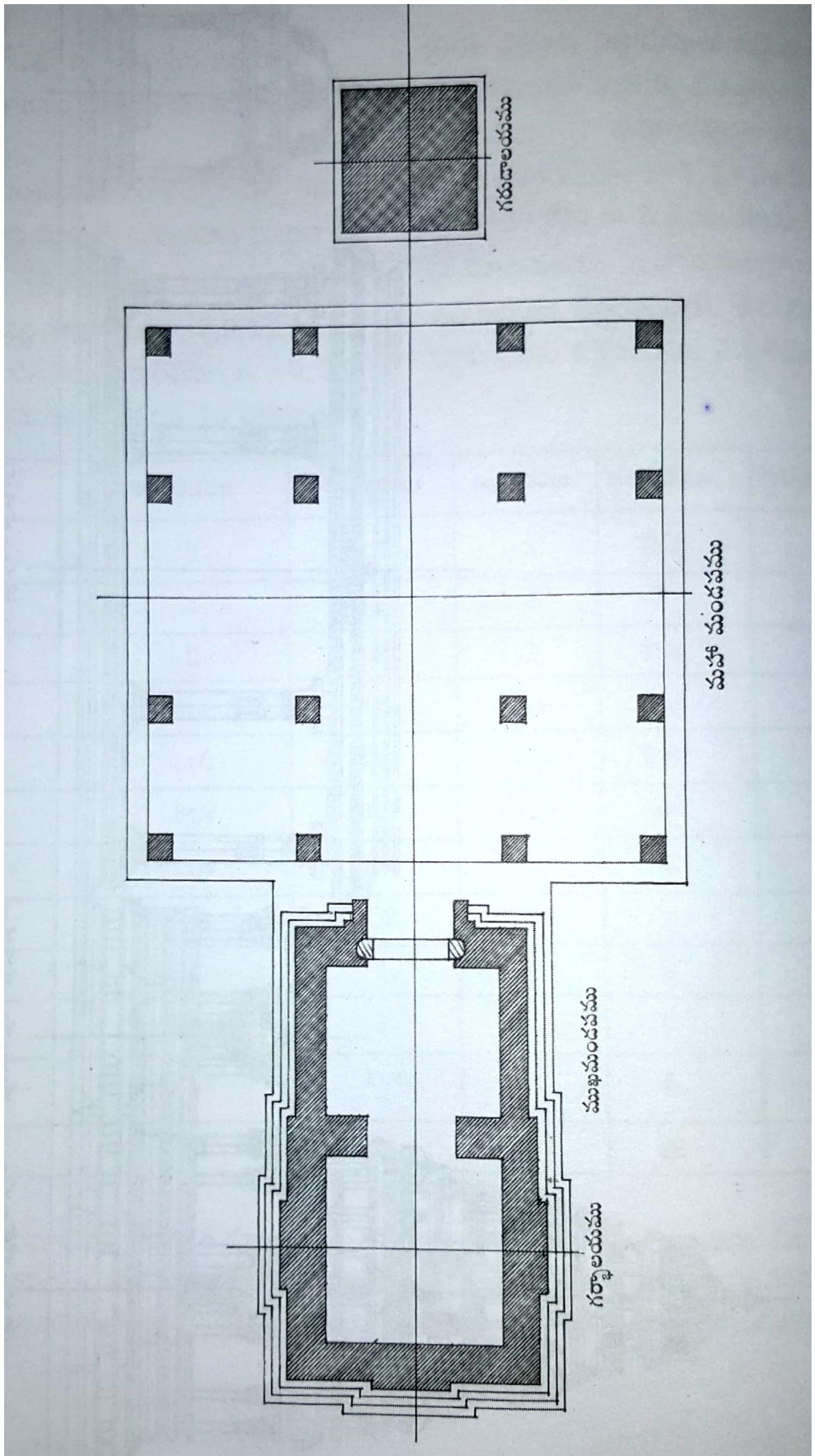


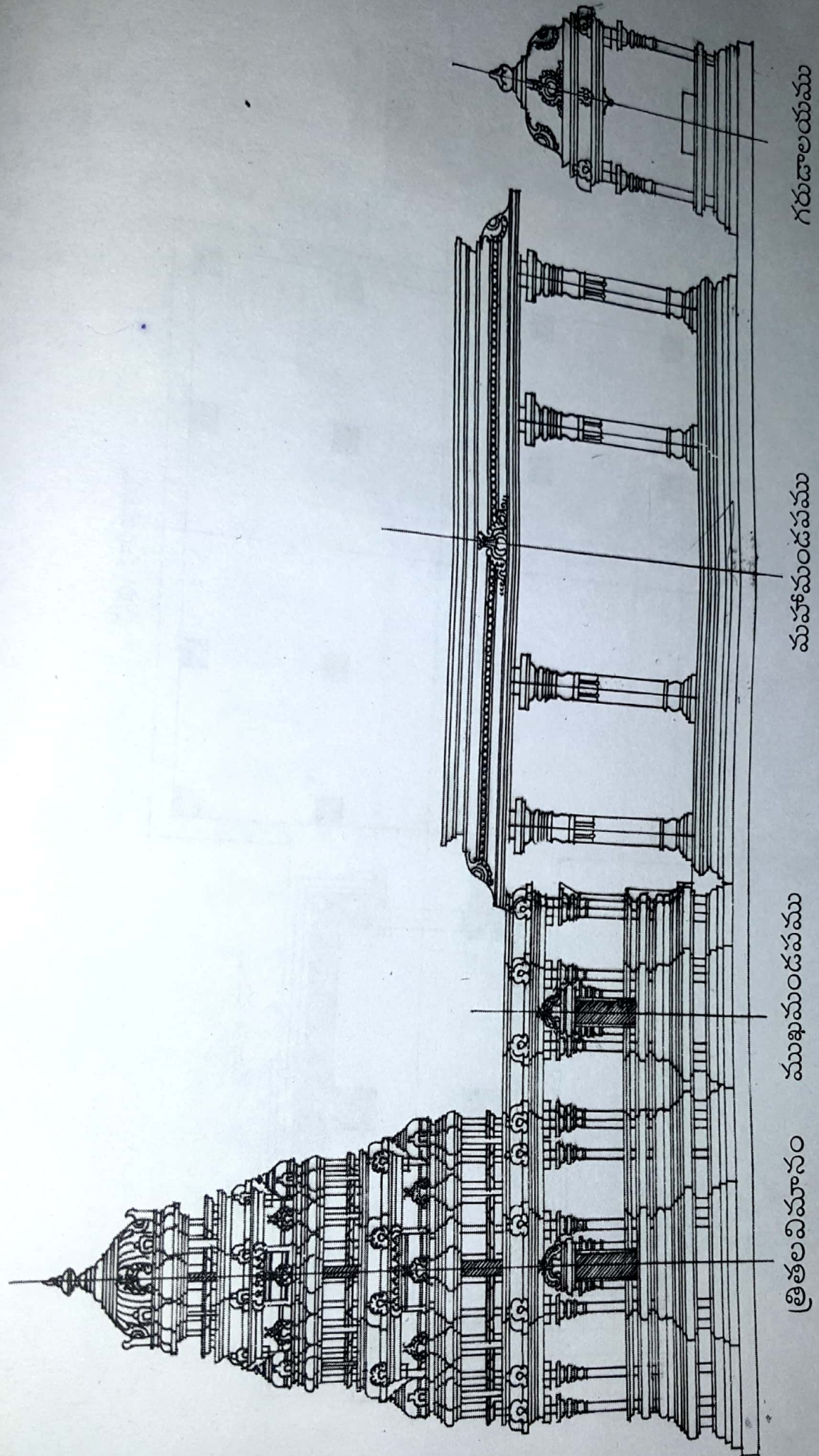
దేహమే దేవాలయం

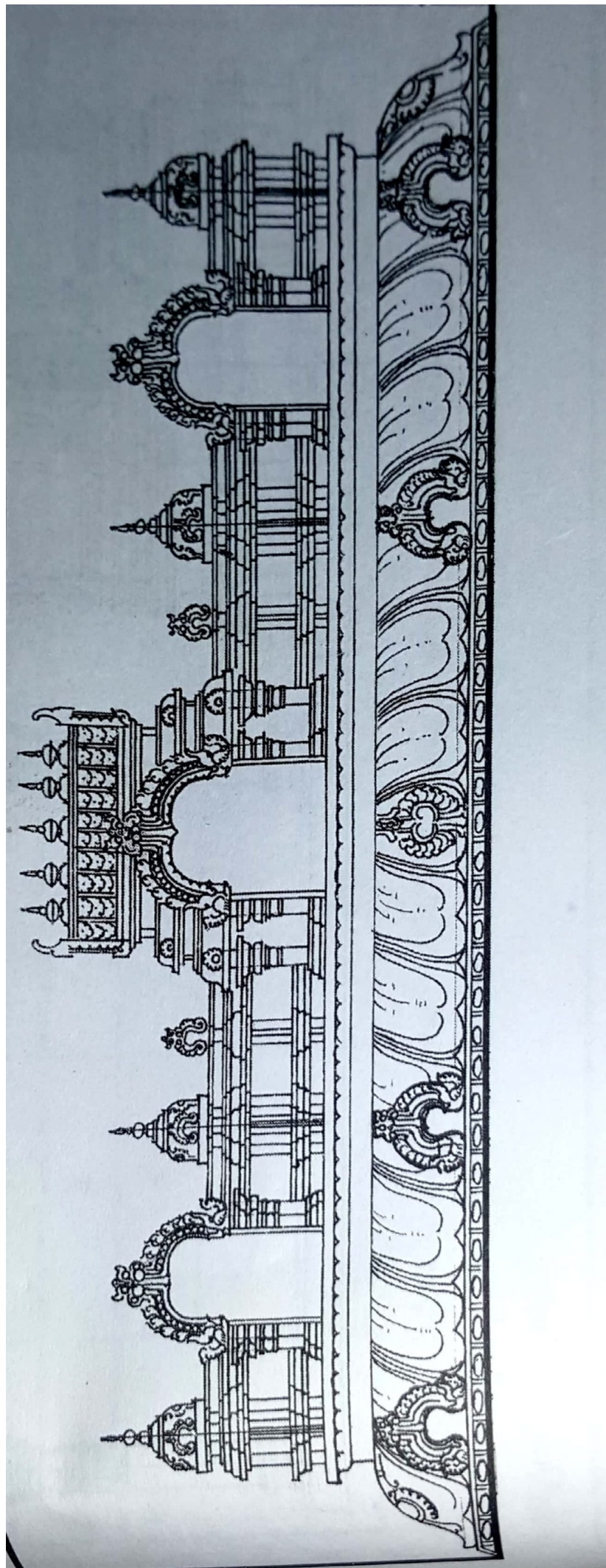
గర్భగృహం శివర: ప్రాకారం అంతరాళం గళంతరము
 మండపం కుక్షిలిత్యాదు: ప్రాకారం బాహు బాహు
 గోపురం వేద ముత్యాదు: ధ్వజోటివస్తువులు

రా: !!
 ధ్వజోటి వస్తువు









ఉంది. 'పురాపినవమ్' అని రెండో నిర్వచనం.

పూర్వసంప్రదాయాలైన ధర్మాదులను సరికొత్తగా ఎప్పటికప్పుడు నిత్యనూతనంగా వివరించేవని అర్థం.

“పురాణం సర్వశాస్త్రాణాం ప్రథమం బ్రహ్మణాస్మృతమ్ నిత్యం శబ్దమయం, పుణ్యం శతకోటి విస్తరం”

కృతయుగంలో వందలకోట్ల సంఖ్యతో కూడిన బృహత్ పురాణం ఒకటే ఉండేది. క్రమంగా పురాణాలు విభజింపబడ్డాయి. వ్యాసుడంటే విస్తృతంగా విషయాన్ని చెప్పేవాడని అర్థం. పురాణ నిర్మాణం, పురాణవివరణం, పురాణ ప్రచార సారథ్యం ఇవన్నీ సమర్థవంతంగా నిర్వహించగలిగిన సామర్థ్యం కృష్ణద్వైపాయన మహర్షిది. ఆయన సాక్షాత్తు నారాయణస్వరూపం. ఆయన పురాణాలను యుగాలెన్నైనా చెక్కుచెదరకుండా ఉండేలా భావితరాలకు అందంగా సృష్టించి అందించాడు.

పురాణ లక్షణం : సర్గం, ప్రతిసర్గం, వంశం, మన్వంతరం, వంశానుచరితం అనేవి పురాణ లక్షణాలు. సర్గం అంటే సృష్టి. పరమాత్మ మాయావిలాసం చేత అవ్యాకృత తత్త్వం, మహాతత్త్వం, అహంకారం, పంచభూతాలుగా రూపాంతరం చెందడం. ఇక ప్రతి సర్గంలో బ్రహ్మమానసపుత్రులైన మరీచాది ప్రజాపతుల వలన జరిగిన చరాచర భూత సృష్టి. వంశంలో సృష్టిక్రమంలో సాగిన ఋషులు, రాజవంశాలు వివరింపబడతాయి. మన్వంతరంలో స్వయంభువుడు మొదలైన ప్రభువుల పరిపాలనలో గల విషయాలు, వివిధ మన్వంతరాలలో సప్తఋషుల గూర్చిన వివరాలు ఉంటాయి. వంశానుచరితంలో రాజవంశాల వివరాలు, పాలనా విశేషాలు ఉంటాయి.

పురాణాల సంఖ్య 18. అందుకే వీటిని అష్టాదశ పురాణాలు అంటారు. ఇవికాక 18 ఉపపురాణాలున్నాయి ప్రఖ్యాతంగా ఉన్నాయి.

ఈ రెండింటికి తేడా తెలియడానికి గాను, పురాణాలకు పూర్వం 'మహా' అని, ఉపపురాణాలకు పూర్వం 'ఉప' అని పదాలను చేర్చి సంప్రదాయంగా పిలుస్తున్నారు. మహాపురాణాల స్వభావ విషయానికి వస్తే అవి సాత్వికం, రాజసం, తామసికం అని విభజించవచ్చు. ఇందులో కొన్ని పురాణాలు శివ, విష్ణు, బ్రహ్మ సంబంధమైనవిగా మరికొన్ని అగ్ని, సూర్య సంబంధమైనవిగా స్థూలంగా చెప్పుకోవచ్చు. వీటిలో విజ్ఞాన సంబంధమైననీ, తీర్థ సంబంధమైననీ, ఇతిహాసిక సంబంధమైన అంశాలను వేదవ్యాసులు అద్భుతంగా వర్ణించారు.

“అష్టాదశ పురాణానాం కర్తా సత్యవతీ సుతః”

పరమపవిత్రమైనవి, భగవదుపాసనా సోపానాలు, ముక్తి దారు కాలు అష్టాదశ పురాణాలలో శబ్దాత్మక పరబ్రహ్మోపాసన సాకారం చేయబడింది.

“మధ్యయం, భద్రయం చైవ బ్రత్రయం వ చతుష్టయం అ నా ప లింగ కూ స్కా ని పురాణాని పృథక్ పృథక్”

మత్స్యపురాణం, మార్కండేయ పురాణం, భాగవతపురాణం, భవిష్యపురాణం, బ్రహ్మవైవర్తపురాణం, బ్రహ్మపురాణం, బ్రహ్మాండ పురాణం, వరాహపురాణం, వామనపురాణం, వాయు (శివ) పురాణం, విష్ణుపురాణం, పద్మ పురాణం, అగ్నిపురాణం, నారద పురాణం, లింగపురాణం, కూర్మ పురాణం, గరుడపురాణం, స్కంద పురాణం. ఈ పురాణాల వివరణలన్నీ సవివరంగా చెబుతాను” అన్నాడు.

అనర్గళంగా సాగిన సూతమహర్షి గళం కాస్త విశ్రాంతి తీసుకొని, శ్రవణ శుభగంగా శౌనకాది మహర్షులకు మత్స్య పురాణాన్ని విని పించడం ప్రారంభించింది. అష్టాదశ పురాణామృతధారలతో తరించడానికి శౌనకాది మహర్షులు సంసిద్ధులయ్యారు. (సశేషం)

దేవతలు - వాహనాలు

దేవుడు ఒకడే అయినా అనేక రూపాల్లో పూజలు అందుకుంటూ ఉంటాడు. వివిధ క్షేత్రాల్లో కొలువుదీరిన దైవాలకి వార్షికోత్సవాలు, కళ్యాణోత్సవాలు, బ్రహ్మోత్సవాలు జరుగుతుంటాయి. ఈ సందర్భాల్లో ఉత్సవమూర్తులను ఒక్కోరోజు ఒక్కో వాహనంపై ఊరేగిస్తూ వుంటారు. విష్ణువుకి, శివుడికి, శక్తికి నిర్దేశించబడిన వాహనాలు వేరు వేరుగా వుంటాయి. ఆగమశాస్త్రం ప్రకారం జరిపే ఈ ఉత్సవాల్లో ప్రధాన వాహనం పైనే కాకుండా ఇతర వాహనాలపై ఊరేగే దైవాలని వీక్షించి తరించడానికి భక్తులు విశేష సంఖ్యలో తరలి వస్తుంటారు. ఏయే దైవాలకి ఎవరు ఎందుకు వాహనాలుగా మారారనేది పురాణాలలో స్పష్టంగా పేర్కొనడం జరిగింది. విష్ణుమూర్తి వాహనం గరుడపక్షి అయితే లక్ష్మీదేవి వాహనంగా గుడ్లగూబ కనిపిస్తుంది. శివుడి వాహనంగా నంది, పార్వతి వాహనంగా సింహం, వినాయకుడి వాహనంగా ఎలుక, కుమారస్వామి వాహనంగా నెమలి, బ్రహ్మ, సరస్వతి వాహనంగా హంస, సూర్యుడి వాహనంగా ఏడు గుర్రాల రథం, చంద్రుడి వాహనంగా లేడి, శని వాహనంగా కాకి దర్శనమిస్తాయి. ఇంద్రుడి వాహనంగా ఏనుగు, హనుమంతుడి వాహనంగా ఒంటె, యముడి వాహనంగా మహిషం, దుర్గాదేవి వాహనంగా పిల్లపులి, గంగ వాహనంగా మొసలి, యమున వాహనంగా తాబేలు, రతీ మన్మథుల వాహనంగా చిలుక వున్నాయి. ఆయా వాహనాలు భక్తుల చెంతకి భగవంతుడిని తీసుకువస్తూ, వారికి నయనానందాన్ని కలిగిస్తూ వుంటాయి. ఉత్సవాల్లో ఉత్సాహాన్ని నింపుతూ, మోక్షమార్గాన మొదటి మెట్టును ఎక్కిస్తుంటాయి. - కొండూ ధర్మనాథం



పబ్బాయతన సంహిత

అవతరించి అద్వైతమతాన్ని ప్రచారంలోకితెచ్చారు. దేవుడు ఒక్కడే, అని శివకేశవులకు భేదంలేదని చాటిచెప్పారు.

‘శివాయ విష్ణు రూపాయ శివరూపాయ విష్ణవే
శివస్య హృదయం విష్ణుః విష్ణోశ్చ హృదయం శివః’

అనే ఆర్యోక్తి ప్రకారం శివ కేశవులకు భేదంలేదని వారి ఇద్దరిని భేద భావంతో చూడటం దోషమని చాటి చెప్పారు.

అట్టి సమయంలో శ్రీశంకరభగవత్పాదులు తాను స్థాపించిన షణ్మతాదులు(శివ,విష్ణు,రవి,గణపతి,దేవి మరియు కుమారస్వామి) వీరిలో కుమార స్వామి తప్ప మిగిలిన ఐదుగురుని కలిపి పంచాయతన దేవతలుగా నిర్మాణము చేసియున్నారు.

పంచాయతన నిర్మాణము

(1) ఆదౌ పూజ్యో గణాధిపః

ఏ దేవుని పూజచేయదలచినా ముందు గణపతిపూజ చేయాలని శాస్త్రము. విఘ్నాలు కలుగకుండా ఉండటానికి గణపతిని పూజిస్తాము.

(2) శివుడు (శంకరుడు) : ‘ఈశానః సర్వ విద్యానామ్’ మరియు ‘ఐశ్వర్యమీశ్వరాదిచ్ఛేత్’ అనగా ఈశ్వరుడు సకలవిద్యలు, జ్ఞానం, ఐశ్వర్యం, సంపదలు ఇచ్చే దైవం.

(3) విష్ణుః (నారాయణ): ‘మోక్షమిచ్ఛేత్ జనార్దనాత్’ అనగా విష్ణువు మోక్షకారకుడు. మోక్షాన్ని కోరేవారు విష్ణువుని పూజిస్తారు.

(4) ఆదిత్యుడు (సూర్యుడు) : 'ఆరోగ్యం భాస్కరాదిచ్ఛేత్' సూర్యుడు ఆరోగ్యకారకుడు.

(5) దుర్గా (అంబిక) : 'దుర్గా దుర్గతినాశినీ' దుర్గాదేవి దుఃఖాన్ని పోగొడుతుంది. సాధన మార్గంలో ముళ్ళవంటి ఇబ్బందులు తొలగించుకోడానికి గమ్యంవైపు సాగటానికి ఉపయోగపడుతుంది. కనుక శివ, విష్ణు, గణేశ, ఆదిత్య, అంబికలను కలిపి పంచాయతనముగా నిర్మాణముచేసి ఉన్నారు. నిజానికి ఈ ఐదుగురు ఒకే పరమాత్మయొక్క విభిన్న అంశాలు. ఇందలి ప్రతి అంశము ప్రత్యేక నామ, రూప, గుణ, శక్తి, వరదాన, విభూతి సంపత్తి కలిగియున్నది.

పంచాయతన దేవతల్లో తన ఇష్టదైవాన్ని మధ్యనఉంచుకొని మిగిలిన నలుగురినిచుట్టూ నాలుగు విదిశలలో ఉంచి పూజించు కుంటూ శివకేశవాదులకు భేదములేదని ఒకరితో నొకరు కలహించు కోనవసరములేదని శ్రీశంకరభగవత్పాదులు అందరిని ఒక త్రాటి మీదకు తెచ్చే ప్రయత్నం చేశారు.

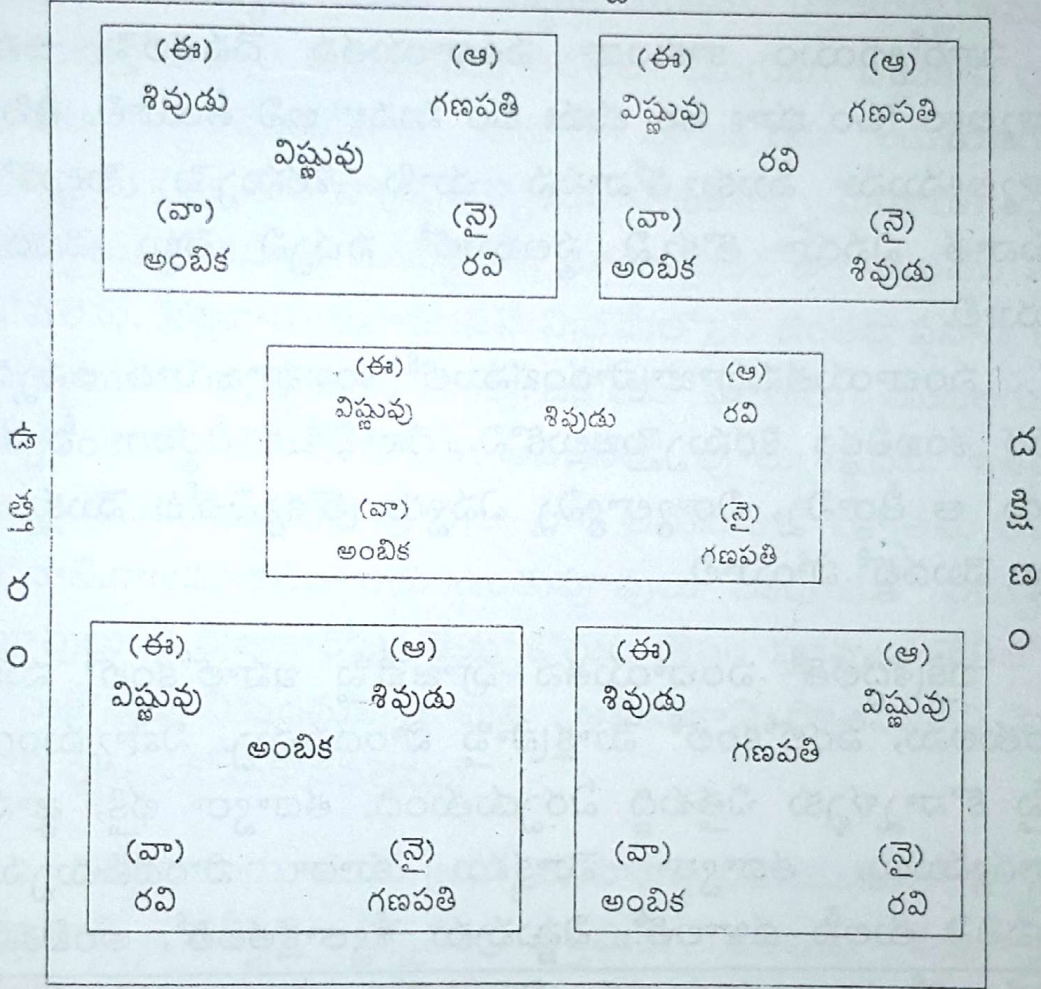
శ్లో॥ శంభౌ మధ్యగతే హరీన హరభూదేవ్యో, హరౌ శఙ్కరే
భాస్యే నాగసుతా, రవౌ హరి గణేశా జామ్బికా స్థాపయేత్ |
దేవ్యాం విష్ణు హరే భ వక్త్ర రవయో, లమ్బోదరేఽ జేశ్వరే
నార్యా, శృంగర ది జ్ఞానాస్తు ఫలదావ్యస్తాస్తు తే హానిదాః ||

పై శ్లోకముననుసరించి ఎవరి ఇష్టదైవమును వారు మధ్యలో ఉంచుకొని మిగిలిన నలుగురిని చుట్టూ నాలుగు దిశల్లో (మూలలు) ఉంచుకొని పూజచేసినయెడల సత్ఫలితాన్ని పొంద వచ్చునని శ్రీ శంకరభగవత్పాదులు తెలియజేసి ఉన్నారు. మనం తూర్పుముఖంగా (యజమాని తూర్పువైపునకు చూస్తూ) కూర్చోవాలి. (ఈ దిక్కులను ప్రత్యక్ష దిక్కులు అంటారు). కొందరు ఉత్తరంగా కూర్చునిన పూజ చేస్తారు. ఆ ఉత్తర దిక్కునే

పబ్బాయతన సంహిత

తాత్కాలికంగా తూర్పు దిక్కుగా భావించుకోవాలి. (వీటిని పరోక్ష దిక్కులు అంటారు). ఏదిక్కువైపునకు కూర్చునినను దేవతార్చనా పశ్చిమును తనకెదురుగా పై చూపిన పటములొవలెనో ఉంచు కొనవలెను. శివలింగ పానుపట్టము ఎప్పుడు ఉత్తరమువైపు చూస్తూ ఉండాలి.

తూర్పు



ఈ: ఈశాన్యం

ప డ మ ర

ఆ: ఆగ్నేయం

యజమాని

నై: నైరుతి

వా: వాయవ్యం

‘రుద్రశబ్దాత్ అజ్ఞానం దూరీకరతీతి రుద్రః’

అథవా ‘రుజం ద్రావయతి, ఖండయతీతి రుద్రః’

అనగా అజ్ఞానమును దూరము చేయువాడు గనుక రుద్రుడని

పచ్చాయతన సంహిత

పిలువబడుచున్నాడు. మరియు రోగము అనగా భవరోగమును మరియు దేహసంబంధమైనరోగమును గూడా ఖండించుచున్నాడు కనుక రుద్రుడని పిలువబడు చున్నాడు. కావున అటువంటి రుద్రుని రుద్రమంత్రములచేత తత్ ద్రవ్యములచేత అభిషేక పూజలొనర్చిన మహాఫలము కలిగితిరును. కనుకనే శివపంచాయతనము ఎక్కువగా ప్రాశస్త్యము పొందినది.

సూర్యోదయం కాకుండా పంచాయతన దేవతలపై ఉన్న నిర్మాల్యం 'ఓం భూః ఓం భువః ఓం సువః' అని తీయాలి. తీసిన నిర్మాల్యమును ముక్కుతోవాసన చూసి శిరస్సుపై పెట్టుకొని తరువాత ఎవరూ తొక్కిని స్థలములో పచ్చని చెట్టు మొదట వేయాలి.

పంచాయతనపూజాప్రారంభములో శంఖపూజగూడ ఉన్నది. చివర శంఖతీర్థం శిరస్సుపైజల్లుకొని, దేవాభిషేక తీర్థంగా స్వీకరిస్తారు. ఆ తీర్థాన్ని, నిర్మాల్యాన్ని ఎవ్వరు త్రొక్కినచోట మొక్క / చెట్టు మొదట్లో పోయాలి.

భక్తిశ్రద్ధలతో పంచాయతన పూజచేస్తే ఇహలోకంలో సుఖ శాంతులను, పరలోకంలో మోక్షప్రాప్తి పొందవచ్చు. నిష్కామంగా చేస్తే కొన్నాళ్ళకు చిత్తశుద్ధి ఏర్పడుతుంది. తద్వారా భక్తి, జ్ఞాన, వైరాగ్యములు, తద్వారా మోక్షము కూడా పొందవచ్చును. గణపతిని తులసీ దళాలతో, విష్ణువును శ్వేతాక్షతలతో, అంబికను దూర్వలతో పూజించ కూడదు. విష్ణువుపైన, శంఖముపైన తులసీ దళం ఉండాలి. గణపతిని దూర్వలతో; రవిని ఎర్రటి పూలతో పూజించడం శ్రేష్ఠం; ఈశ్వరుని బిల్వదళాలతో పూజించాలి. తొడిమి తీసిన పూలతో పూజచేయడం సంప్రదాయం. యజమానికి పురుడు గాని మైలగాని వచ్చినప్పుడు పంచాయతన దేవతాపూజ చేయగూడదు. అలాంటి సమయంలో ఇతరులచేత పూజ చేయించ